



भारत सरकार भारत मौसम विज्ञान विभाग

अंक: 3 वर्ष: 2016



भारत मौसम विज्ञान विभाग पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय प्रादेशिक मौसम केन्द्र, हवाई अड्डा नागपुर 440005 - (महाराष्ट्र) अंक 3 ऋतुरंग

ऋतुरंग

(प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागप्र की गृह पत्रिका)

प्रमुख संरक्षक

एच.ए.के.सिंह कार्यभारी उपमहानिदेशक प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर

संरक्षक

ए.डी.ताठे *निदेशक,प्रा.मौ.कें.नागपुर*

संपादक

श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवादक

सह संपादक

श्री. डी.एस.गायकवाड, सहायक मौसम विज्ञानी - ।

सहयोगी सदस्य

1.श्री.एस.एन.बिद्यांता,वै.स.2.श्री.एम.आर.कान्होलकर,वै.स.3.श्रीमती.एस.वी.चक्रवर्ती,स.मौ.वि.- ॥

पत्र व्यवहार का पता

संपादक- ऋतुरंग, प्रादेशिक मौसम केंद्र, हवाई अङ्डा, नागपुर-440005

(इस अंक में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल सहमत हो अनिवार्य नहीं एवं रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार है ।)



महानिदेशक भारत मौसम विज्ञान विभाग मौसम भवन, लोदी रोड नई दिल्ली- 110003

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक हर्ष हो रहा है कि प्रादेशिक मौसम केंद्र-नागपुर अपनी विभागीय हिंदी गृह पत्रिका ऋतुरंग के तृतीय अंक का प्रकाशन कर रहा है। यह हिंदी के प्रचार-प्रसार की ओर एक शुभ संकेत है। राजभाषा के दृष्टिकोण से गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

आशा है कि पत्रिका के आगामी अंकों में कार्यालय के कार्मिकों द्वारा और अधिक तकनीकी लेखों और जानकारियों का समावेश किया जाएगा एवं हिंदी को और अधिक प्रभावपूर्ण बनाने के लिए कार्यालय के कार्यों के लिए कम्प्युटर एवं इलेक्ट्रानिक उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा साथ ही आप सभी से मेरा आग्रह है कि आप अपने नित्य-प्रतिदिन के कार्यों में सहज सुबोध हिंदी का प्रयोग करें और राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में सदैव तत्पर रहें।

ऋतुरंग पित्रका राजभाषा के प्रगति की दिशा में रीढ़ की हड्डी साबित होंगी । मैं पित्रका से जुड़े सभी रचनाकारों तथा संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं उनके सार्थक प्रयास के लिए बधाई देता हूँ ।

MADOLE SIPIZ

(डॉ. लक्ष्मण सिंह राठोड़)

अंक 3 ऋत्रंग



उपमहानिदेशक प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर-440005

उपमहानिदेशक महोदय की कलम से

कार्यालयीन गृह पत्रिका ऋतुरंग के तृतीय अंक को समर्पित करते हुए अत्यंत हर्ष एवं गर्व महसूस हो रहा है । गृहपत्रिका का प्रकाशन राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है । इसके प्रकाशन से रचनाकारों के तकनीकि, साहित्यिक, एवं हास्य जैसे विविध प्रतिभाओं को उजागर करने का यह एक स्दृढ मंच हैं ।

कार्यालय में होनेवाली विभिन्न कार्यक्रम हिंदी में ही आयोजित की जाती है। जन मानस को जोड़ने वाली इस मधुर भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए प्रतिवर्ष 14 सितंबर, हिंदी पखवाड़ा के रूप में मनाया जाता है। सरकारी कामकाज करने में कर्मियों को किसी प्रकार की विकट स्थिति उत्पन्न न हो इसलिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता हैं।

भारत जैसे बहुभाषीय देश में केवल "हिंदी" ऐसी भाषा है जिसमें बड़ी सरलता एवं सुगमता से कार्य किया जा सकता है । मैं पत्रिका के उज्जवल भविष्य एवं सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को शुभकामनाएं एवं रचनाकारों को बधाई देता हूँ ।

पत्रिका से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ बधाई देता हूँ।

和一次. 南. 新

(एच.ए.के.सिंह)

अंक 3 ऋत्रंग



निदेशक प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर-440005

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका ऋतुरंग के प्रगति पथ को देखकर अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है । ज्ञानवर्धक, पठनीय, सरल रचनाओं से ओत-प्रोत ऋतुरंग अपने आप में परिपूर्ण है ।

कार्मिकों से निवेदन है कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के दृष्टिकोण से तथा विविध विषयों पर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने का यह एक स्वर्णिम अवसर है इस मंच के माध्यम से पाठकों को अलग-अलग विषयों की जानकारी मिलती है और पित्रका कार्मिकों के भावनाओं का दर्पण है पित्रका के सफल प्रकाशन एवं अपनी रचनाओं से इसे पिरपूर्ण करनेवाले अधिकारियों / कर्मचारियों को मैं बधाई देता हूँ, साथ ही संपादक मंडल के सभी सदस्यों द्वारा किए गए कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें हार्दिक शुभेच्छा देता हूँ।

ऋत्रंग पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक श्भकामनाएँ

Dan-

(ए.डी.ताठे)

अंक 3



वरीष्ठ हिंदी अधिकारी मौसम विज्ञान के महानिदेशक का कार्यालय,मौसम भवन, लोदी रोड नई दिल्ली- 110003

संदेश

नए नए रंग लिए ऋतुरंग फिर प्रस्तुत है। मुझे प्रसन्नता इस बात की है कि कार्यालय में ऋतुरंग ने जो लोगों को मंच प्रदान किया, उससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति मिली हिंदी लेखन को बल मिला। भारत वर्ष की वाणी हिंदी का प्रचार-प्रसार सीधा प्रत्येक भारतवासी के आत्मसम्मान से जुड़ा है। निसन्देह ऋतुरंग इस दिशा में जिस आत्मविश्वास से आगे बढ़ रही है उसके लिए समस्त संपादन मंडल, बधाई के पात्र है। नित्य नए नए रंग लिए ऋतुएं आती रहें।

शुभकामनाओं सहित

Dail .

(रेवा शर्मा)

अंक 3 ऋतुरंग



सहायक मौसम विज्ञानी-1(प्र) एवं हिंदी संपर्क अधिकारी प्रादेशिक मौसम केंद्र नागपुर-440005

संदेश

यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय अपनी गृह पत्रिका 'ऋतुरंग' के तृतीय अंक प्रकाशित कर रहा है। कार्यालय के कर्मचारी एवं अधिकारीगण अपने विचारों से, ज्ञानवर्धक लेखों, कविताओं एवं सुविचारों से पत्रिका के इस मंच को सजाने का हर संभव प्रयास कर रहें है पत्रिका के इस सफर में मैं उससे जुड़े सभी रचनाकारों को बधाई देना चाहता हूँ जो विविध रंगों एवं रसों से ओतप्रोत अपनी रचनाओं से 'ऋतुरंग' को पठनीय एवं रोचक बनाते है। साथ ही यह एक दूसरे से जुड़ने का अच्छा माध्यम है।

मैं सभी रचनाकारों, पाठकों एवं संपादक मंडल के सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ एवं भविष्य में भी गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

(एल.एस.देशभ्रतार)

अंक 3 ऋतुरंग



संपादकीय

अलग अलग धर्म, भाषा-भाषी ये भारत देश का अंग है। अनेकता में, एकता लिए हम सभी एक संग है। सारे जगत में है विशेष अलग ढंग, अलग रंग है। सोने में सुहागा,वैसे ही,नागपुर, मौसम पत्रिका ऋतुरंग हैं॥

कार्यालय की गृह पत्रिका ऋतुरंग के तृतीय अंक को आपके समक्ष रखते हुए एवं अपने मन की बात आप तक पहुँचाने का एक सुनहरा अवसर पत्रिका के माध्यम से प्राप्त हुआ है। हिंदी भाषा को राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 67 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। लेकिन हिंदी की प्रगति हमारे और आपके हाथ में है। किसी भी राष्ट्र के इतिहास और संस्कृति की पहचान भाषा से होती है। हिंदी भाषा आज विश्व भाषा के रूप में पहचान बना रही है। देश के विकास में भाषा का अपना महत्व है। भाषा देश की संस्कृति एवं गौरव का प्रतीक है।

हिंदी भाषा की सरलता के कारण आजकल भारत देश को जानने एवं समझने के लिए इसे अपनाने लगे है एवं वाणिज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा दे रहे हैं । देश-विदेश में हिंदी फिल्मों का प्रदर्शन एवं महोत्सव का आयोजन हो रहा है एवं हिंदी फिल्मों के कलाकारों को विदेशों में सम्मानित किया जा रहा है जो यह शुभ संकेत देता है कि हिंदी भाषा कितनी विख्यात है । भारत के फिल्म कलाकार 'राजकपूर जी को कौन नहीं जानता वे भारत में ही नहीं विदेशों में भी प्रसिध्द है ।

गृह पत्रिका 'ऋतुरंग' का लक्ष्य सभी पाठकों के समक्ष सुन्दर, ज्ञानवर्धक, रोचकपूर्ण बातों को पहुँचाना है जिसका श्रेय मैं पत्रिका में शामिल किए सभी रचनाकारों को देना चाहती हूँ । मुख्यालय नई दिल्ली से प्राप्त विशेष प्रोत्साहन एवं दिशा -निर्देशों से गृहपत्रिका ऋतुरंग धीरे-धीरे अपना कदम प्रगति की ओर बढ़ा रही है । गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं रचनाकारों, एवं कार्यालय प्रमुख श्री.एच.ए.के.सिंह, उप महानिदेशक महोदय को तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हूँ । गृह पत्रिका के इस मंच से रचनाकार अपने भावनाओं को आसानी से व्यक्त कर सकते है और एक दूसरे से जुड़ने का यह एक अच्छा सुअवसर है । आनेवाली वर्षों में पत्रिका को और अधिक पठनीय, आकर्षक, ज्ञानवर्धक एवं बोधगम्य बनाने में आपके सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं का सहर्ष स्वागत है, तािक आगामी अंकों में और अधिक निखार लाया जा सकें ।



(शांता उन्नीकृष्णन)

अंक 3 ऋत्रंग



उप संपादकीय

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि पिछले दो वर्षों की सुपरंपरा को कायम रखते हुए प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर अपनी गृह पत्रिका 'ऋतुरंग' का तृतीय अंक प्रकाशित कर रहा है । हिंदी पत्रिका के रूप में यह राजभाषा हिंदी की दशा और दिशा की बातों को लेकर निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है ।

मैं ऋतुरंग के सभी रचनाकारों जिन्होंने अपनी रचनाओं से ऋतुरंग पत्रिका को रोचक पठनीय एवं गौरवपूर्ण बनाया है उनका तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूँ । गृह पत्रिका का विशेष उदे्श्य हिंदी के माध्यम से विविध विषयों की जानकारी सरल भाषा में लोगों तक पहुँचाना है, जिससे राजभाषा हिंदी का प्रचार- प्रसार बढेगा ।

आज के इस सूचना एवं प्रौद्योगिकी युग में कम्प्युटर हिंदी के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम है । आज कम्प्युटर पर हिंदी में काम करना दिन - प्रतिदिन आसान होता जा रहा है और इस कार्य के लिए कार्यालय में कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए कम्प्युटर पर प्रशिक्षण दिया जाता हैं। अतः इस माध्यम को सशक्त बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपना अधिकाधिक कार्य कम्प्युटर पर हिंदी में करें और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपना सहयोग दें।

'ऋतुरंग' पत्रिका' के आगामी अंक को और अधिक बहुउपयोगी एवं रूचिकर बनाने में आप सभी का सहयोग हमें यथावत प्राप्त होता रहेगा इसी आशा एवं विश्वास के साथ.....

/ Elmings

(डी.एस.गायकवाड)

अनुक्रमणिका

अ.क्र	लेख/कविता/रिपोर्ट	पृ.क्र.
1.	ऋतुरंग -ए.एम.भट्ट	10
2.	कार्यालय की वर्ष 2015-16 की गतिविधियाँ-	11
3.	देश को एक सूत्र में बॉधती हिंदी भाषा- डी.एस.गायकवाड	14
4.	आज का जमाना- डी.पी.सांधोकर	17
5.	चक्रवातीय विक्षोभ के पूर्वानुमान मे उपयोगी चेतावनी ग्राफिक्स- प्रकाश चिंचोले	18
6.	माँ- आर.एन.यादव	26
7.	हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी- डॉ.ग्रुदत्त मिश्रा	27
8.	मेरे देश के नेता- आर.डी.मेश्राम	32
9.	सटीक मौसम पूर्वानुमान देने में उच्च तकनीकी कम्प्यूटर संजाल का योगदान - पी.एल.देवाँगन	33
10.	कलाकार- एम. आर. कान्होलकर	38
11.	मेक इन इंडिया (भारत में निर्मित) कार्यक्रम में भारत मौसम विज्ञान विभाग की भूमिका -ए.वी.गोडे	39
12.	बेचारे ने सोचा था- डॉ. रविंद्र आकरे	43
13.	दीपक तले अंधेरा कब तक- आर.डी.मेश्राम	45
14.	एक दीपक मेरे द्वार पर भी जलने दो/मेरा शहर - ए.एम.भट्ट	47
15.	नेताजी का खोखला विकास जन-आंदोलन- ए.वी.गोडे	48
16.	खूबस्रती- डी.एस.गायकवाड	49
17.	बढ़ती विलासिता - घटती आशा- ए.एम.भट्ट	50
18.	साइड इफेक्ट्स - यूँ मुस्कुराना- प्रकाश चिंचोले	52
19.	में भी बन्ँगा एक ट्यंग्य कलाकार- एम.टी.एस.शिवानंद	54
20.	आहिस्ता चल जिंदगी - डी.पी.सांधोकर	55
21.	वायु प्रदुषण के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव-विवेक कुमार पाण्डेय एवं अनुपम कश्यपि	56
22.	क्या आप जानते हैं ?- डी.पी.सांधोकर	64
23.	देशवासियों पर हिंदी नहीं अंग्रेजी भाषा थोपी गई है- शांता उन्नीकृष्णन	66
24.	पांचवी अखिल भारतीय विभागीय हिंदी संगोष्ठी	67
25.	कार्यालय की उपलब्धियां	71
26.	हिंदी पख़वाडा के कार्यक्रमों की झलक	73
27.	हिंदी संगोष्ठी मौसम केंद्र भोपाल झलक	75

ऋतुरंग

-ए.एम.भट्ट,स.मौ.वि-॥,मौ.का.अंबिकापुर

जिस जगत का मुकुट हिमालय, सुन्दर निर्मल पावन गंगाजल है।
जिस जगत की ऋतुएँ रंग भरी , वैसा ही अपना ऋतुरंग है।
पूरब का उजियारा गहन अंध को चीरता, वसुधा का ऊर्जाबल है।
बंगाल - हिंद का जल घनवर्षा से उर्वर होता सा अपना ऋतुरंग है।
पूर्वा खेतों की हरियाली लाता, पछुआ रोग विनाशक और शीतल है।
कोमल कपोल पल्लव-पुष्प-मंजरी की बसंती उपवन ये ऋतुरंग है।
अन्तर की तरंगित अनुकृतियों को, आने दो लेखनी के नोकों तक,
ऐ विज्ञानी ! तू भी एक लिपिकार है और तुमसे ही ऋतुरंग है।

वर्ष 2015-2016 की राजभाषा गतिविधियां

वर्ष 2015 - 2016 में हुई राजभाषा गतिविधियों से आपको अवगत कराते है ।

- 1. कार्यालय में राजभाषा द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार चार हिंदी तिमाही बैठकों का आयोजन किया जाता है । कार्यालय द्वारा आयोजित प्रशासनिक एवं तकनीिक बैठकों में चर्चा हिंदी में ही की जाती है । कार्यालय में समय से तिमाही बैठकों का आयोजन किया जाता है । जिसमें वार्षिक रिपोर्ट में दिए गए मदों पर अमल किए जाने पर चर्चा की जाती है ।
- 2. अनुभागों के प्रभारी अधिकारियों से समय- समय पर हिंदी में पत्राचार एवं टिप्पणी लेखन बढ़ाने के लिए दिशा-निर्देश जारी किए जाते है ।
- 3. राजभाषा द्वारा जारी कार्यक्रमों में धारा 3(3) के अंर्तगत जारी कागजातों पर विशेष जोर दिया जाता है । हिंदी अनुभाग द्वारा धारा 3(3) के अंर्तगत आनेवाले कागजातों को व्दिभाषी में करने हेतु समय-समय पर परिपत्र जारी किया जाता है । अनुभागों द्वारा दिए गए तिमाही रिपोर्टों में व्दिभाषी में जारी पत्रों में धीरे-धीरे अभिवृध्दि होती दिखाई दे रही है ।
- 4. मौसम घटनाओं की रिपोर्ट जैसे मौसम संबंधी पूर्वानुमान व चेतावनियां आकाशवाणी, दूरदर्शन सहित अन्य प्रचार माध्यमों को व्दिभाषी के साथ स्थानिय भाषा में भी दिया जाता है।
- 5. कार्यालय का प्रगति विवरण मेट नेट पर हिंदी में लोड़ किया जाता है।
- 6. हिंदी प्रशिक्षण हिंदी प्रबोध / प्रवीण / प्राज्ञ प्रशिक्षण में कार्यालय के 98% प्रतिशत कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया है । राजभाषा विभाग द्वारा लागू वर्तमान पारंगत प्रशिक्षण में कार्यालय से पहले सत्र में कुल 13 कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । राजभाषा प्रचार-प्रसार के दृष्टिकोण से एवं कार्यालयीन कार्य को आसानी से करने के लिए यह प्रशिक्षण काफी सार्थक सिध्द होगा। सबसे गौरवपूर्ण बात यह है की प्रशिक्षण प्राप्त किए सभी कामिकों ने काफी अच्छे अंक प्राप्त किए है । कुछ कार्मिक पुरस्कार के पात्र भी बने आप सभी को कार्यालय की ओर से बधाई ।
- 7. हिंदी कम्प्युटर प्रशिक्षण कम्प्युटर प्रशिक्षण कार्यालय में ही हिंदी कार्यशाला के दौरान कार्मिकों को युनिकोड में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाता है । 50 प्रतिशत से अधिक कम्प्युटरों में युनिकोड डाले गए हैं ।
- 8. हिंदी प्रोत्साहन योजना कार्यालय में प्रोत्साहन योजना लागू की गई है । इस वर्ष भी कार्मिकों ने प्रोत्साहन योजना में भाग लिया है । कार्मिकों से मेरा निवेदन है कि हिंदी में अधिक से अधिक कार्य कर इस योजना का लाभ उठाए ।

- 9. हिंदी कार्यशाला प्रतिवर्ष वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार कार्यालय में चार कार्यशालाएँ चलाई जाती है । जिसमें कार्मिकों को हिंदी टिप्पणी एवं पत्राचार के विविध प्रकार, हिंदी में कम्प्युटर पर सुगमता एवं शीघ्रता से कार्य करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है साथ ही तकनीकी विषयों पर भी हिंदी में पावर पाइंट प्रस्तुतीकरण दिया जाता है ।
- 10. कार्यालय का वेब-पेज व्दिभाषी में तैयार किया गया है एवं जलवायु विवरण व्दिभाषी में जारी की जाती है ।
- 11. हिंदी तिमाही पत्राचार विवरण ऑनलाइन प्रेषित किया जाता है।
- 12. कार्यालय में सभी अनुभागों के निरीक्षण के दौरान देखा गया है कि कार्यालय के स्थापना अनुभाग में श्री जी.एस.बुरडे, सहायक हिंदी में टिप्पणी, पत्राचार एवं व्दिभाषी में काफी पत्राचार कर रहे है जो की सराहनीय है । उसी तरह निरीक्षण अनुभाग द्वारा 90 प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है आप सभी बधाई के पात्र हैं । कार्यालय के प्रशासन अनुभाग द्वारा भी 80 प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है , प्रादेशिक अनुरक्षण एवं आपूर्ति अनुभाग द्वारा 100 प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है जो कि सराहनीय है ।
- 13. कार्यालय में नियमित रूप से आज का शब्द व्दिभाषी में लिखा जाता है।
- 14. नराकास व्दारा आयोजित विविध प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने अपने नाम दिए है एवं भाग लेते हैं । वर्ष 2015 में नराकास द्वारा आयोजित अंर्तेकार्यालयीन हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता में श्रीमती भारती पारवे ,सहायक को प्रथम पुरस्कार प्राप्त ह्आ है आपको बधाई , आपके कार्य से कार्यालय गौरान्वित ह्आ है ।
- 15. कार्यालय में 28 फरवरी को विज्ञान दिवस तथा 23 मार्च को विश्व मौसम विज्ञान दिवस मनाया जाता है। इस अवसर पर कार्यालय में प्रदर्शनी भी लगाई जाती है। आगंतुकों को कार्यालय की गतिविधियों के संदर्भ में हिंदी में जानकारी दी जाती है।
- 16. कार्यालय में मानसून के दौरान मानचित्र परिचर्चा हिंदी में की जाती है।
- 17. प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर ने कार्यालय के अंतिगत आनेवाले स्टेशनों के लिए हिंदी में सर्वाधिक कार्य करने के लिए राजभाषा शील्ड योजना लागू की है । इस वर्ष का पुरस्कार मौसम केन्द्र भोपाल को दिया जा रहा है ।
- 18. हिंदी पखवाड़े के लिए कार्यालय में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है । कार्मिकगण प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं ।
- 19. कार्यालय द्वारा गृहपित्रका ऋतुरंग पित्रका का पहला संस्करण वर्ष 2014 में निकाली गई थी । वर्ष 2015 के ऋतुरंग संस्करण में शामिल लेखों, किवताओं एवं सुविचारों के लिए मैं उन सभी रचनाकारों को बधाई एवं शुक्रिया अदा करती हूँ जिन्होंने पित्रका को पिरपूर्ण करने में अपना योगदान दिया । गृहपित्रका के संपादन कार्य में श्री डी.एस.गायकवाड,स.मौ.वि.-।, श्री एस.एन.विद्यंता, वै.स.,श्रीमती संगीता चक्रवर्ती,

स.मौ.वि-।। तथा छायाचित्र उपलब्ध कराने में श्री एम.एम.फड़के, स.मौ.वि.-।। का विशेष योगदान रहा है आप सभी सभी बधाई के पात्र है।

- 20. मौ.के.भुवनेश्वर द्वारा माह मार्च में आयोजित एक दिवसीय हिंदी संगोष्ठी में मौ.के.रायपुर से श्री एम.एल.साहू, निदेशक तथा प्रा.मौ.के.नागपुर से श्री ए.वी.गोडे, स.मौ.वि.-। ने भाग लिया । मुख्यालय नई दिल्ली द्वारा आयोजित पांचवी अखिल भारतीय संगोष्ठी में कार्यालय से श्री ए.वी.गोडे तथा श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन ने भाग लिया तथा मौ.के. भोपाल से श्री जी.डी.मिश्रा, स.मौ.वि.-।, श्री के.के.देवांगन,स.मौ.वि.-।। तथा श्री विवेक कुमार पांडेय ,वै.स. ने भाग लिया ।
- 21. कार्यालय की दूरभाष निर्देशिका व्दिभाषी में बनाया गया जिसे पूर्ण रूप देने में श्री डी.एस.गायकवाड, स.मौ.वि.-।, श्रीमती रीना सुरपाम,वै.स. तथा श्रीमती मीना पिल्ले,स.मौ.वि.-।। का विशेष योगदान रहा है ।

कार्यालय को इस वर्ष 2016 में 'राजभाषा कार्यान्वयन' के लिए एवं 'ऋतुरंग पत्रिका' के व्दितीय अंक के लिए विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ है कार्यालय प्रमुख श्री एच.ए.के. सिंह साहब के साथ कार्यालय के प्रत्येक कार्मिक बधाई के पात्र है।

'हिंदी में कार्य करना आसान है शुरुवात करें अपनी हिचकिचाहट और संकोच को दूर करें"।

> 'हमें गुलाब के फुल तक पहुँचने के लिए काँटों का सामना करना ही होगा । लेकिन इस प्रयत्न में काँटे भी मिल सकते हैं, उँचे मूल्यों को लेकर चलनेवाले व्यक्तियों के बीच जटिलताएँ - कठिनाइयाँ अधिक देर तक आड़े नहीं आती ।' - रामधारी सिंह दिनकर

काम करने की चाह हो तो राह खुद ब खुद खुल जाते है । जय हिंद

"प्रतिभा अपनी राह स्वयं निर्धारित कर लेती है और अपना दीप स्वयं ले चलती है."

_ विल्मट.

देश को एक सूत्र में बाँधती हिंदी भाषा

- डी.एस.गायकवाड,स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागप्र

हिंदवी साम्राज्य की साम्राज्ञी मैं, आयों की सुपुत्री हूँ मैं, उत्तर में हिमालय में बसती, दक्षिण में नर्मदा घाटी, पूर्व के भागलपूर से, पश्चिम के जैसलमेर तक फैली।

यह परिचय है, हिंदी भाषा का । वास्तव में सन 1000 ई. में हिंदी को 'पुरानी हिंदी' नाम का संबोधन था । काल विभाजन के हिसाब से हिंदी का प्राचीन काल 1000- ई. में था, मध्यकाल- 1400 ई. में था तथा आधुनिक काल 1800 ई. के बाद माना जाता है । इस संदर्भ में हिंदी का परिचय देते हुए एक किव ने कहा है -

'सन 1000 की उत्पत्ति मेरी सन 1400, में मध्य पहूँची सन 1800, आधुनिक काल मेरा, खड़ी बोली रूप है मेरा असली।

'भारत देश विविध, जाित, धर्म, भाषा, बोली का देश है। यह देश जितना प्राकृतिक सौंदर्य से मोहक है, उतना ही रीित रिवाज, चाल- चलन, रहन-सहन, सांस्कृतिक ज्ञान-विज्ञान संपदा आदि से ओत-प्रोत है। इस देश में अनेक भाषाएँ बोली जाती है, पढ़ी जाती है। इसका स्वरूप अपने-अपने प्रांत के अनुसार भिन्न-भिन्न है। परंतु खािसयत यह है की भले ही घरों में, अध्ययन ,कार्यालयों में अपने प्रांतीय भाषा का उपयोग करते हो, लेकिनबोल-चाल में, वर्तमान व्यवहार में यह सुमधुर कर्ण श्राव्य हिंदी का ही प्रयोग करते है। कारण यह है, की मिठास कुछ और ही है। यह समझने में तथा समझाने में एकदम सरल व साध्य है। देखिए प्रांतों के अनुसार हिंदी के पूरक नाम इस प्रकार है -

'बघेली,छत्तीसगढ़ी,मैथिली, उूर्दू, भोजपुरी मेरी सहेली, हिंदुस्तान की हवा-हवा में जन-जन की मीठी बोली।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति, के.आर.नारायणन ने कहा है-' हिंदी एक जीवित भाषा है, जिसमें सुरम्यता तथा उदारता, प्रतित होती है । हिंदी का यही गुण दुसरी भाषाओं, शब्दों एवं वाक्यों को आत्मसात करने की असली क्षमता प्रदान करता है । हिंदी दक्षिण एशिया नहीं, बल्कि पूरे विश्व के देशों को जोड़ने की क्षमता रखती है । क्योंकि हमने हिंदी भाषा को भारतीय सूचना -

प्रोद्योगिकी का माध्यम बनाना शुरू कर दिया है । ''भारतेन्दु हरिशचंद्र बाबु ने हिंदी के प्रति चेतना का अलख जगाते ह्ए कहा है -

निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल । बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल ।

कभी यह धारणा थी कि अंग्रेजी ही विश्व की पहली भाषा है, क्योंकि यह कहा गया था कि ' अंग्रेजी सल्तनत का सूरज कभी डुबने वाला नहीं है । लेकिन अब यह गलत साबित हो रहा है । कभी मंदारिन (चीनी) को विश्व की सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा कहा, जाता था । किन्तु 'साहित्य रत्न' जयंती प्रसाद नौटीयाल ने यह दावा खारिज किया, क्योंकि हिंदी व उसकी पूरक भाषाएँ के बोले जाने वाले की संख्या 90.2 करोड है और मंदारिन के, बोले जाने वालों की संख्या 87.4 करोड है । यह सर्वेक्षण सन 2004 का है । उक्त कथनानुसार आज देश तथा विदेश में हिंदी बोलने वालों की संख्या अधिक है । उक्त कथनानुसार आज देश तथा विदेश में हिंदी बोलने वालों की संख्या अधिक है ।

मध्यकाल में तुर्कों का प्रभुत्व समाप्त होकर मुगलों का साम्राज्य स्थापित होने लगा था । इस सत्ता परिवर्तन के संक्रांति काल में कुछ समय तक राजपूतों का भी प्रभुत्व रहा था । इन राजपूतों ने हिंदी को विशेष प्रोत्साहन दिया, दूसरे, मुगल शासक यह समझते थे की, बिना हिन्दु जनता की सहानुभुति प्राप्त किए भारत पर शासन करना असंभव है । इसलिए उन लोगों ने जनता से संपर्क स्थापित करना आरंभ किया । जनता से संपर्क जनता की बोली में ही स्थापित किया जा सकता है । सम्राट अकबर ने यही किया, जनता की बोली, हिंदी थी । अकबर, जहाँगीर यहाँ तक कि औरंगजेब ने भी हिंदी- साहित्य को पनपने का अवसर प्रदान किया । एक आधुनिक किव ने कहा है -

"मुगलों ने मानी मेरी प्रतिभा, अकबर ने किया काव्य गान, स्वतंत्रता की बिल वेदी पर, गूँजे हिंदी के गीत महान ।"

हिंदी देश को एक सूत्र में इसलिए बाँधती है क्योंकि, यह बहुत ही स्वाभाविक एवं सीधी-सरल है । वीर-रस में हिंदी इसको स्वाभाविकता के कारण जन-जन में, जोश भर देती है, जन-जन को रोमांचित करती है । जैसे -

'हिंदी ही इस देश की विनम व स्वाभाविक वाणी, वीर-रस में यह जब गाती, याद आती द्शमनों को नानी'

आज हिंदी के बारे में यह भी कहा गया है कि - ''दास्यता की काल कोठरी में आजादी के देखे-

सपने, स्वतंत्र भारत के उदय-गीत गाते, हटा दिये अंधकार अपने। हिंदी का सौंदर्य और यह भी है "भाषायी - अस्मिता गर्व है मेरा, शृंगार रस मेरा खजाना
रंभा-उर्वशी को लाज आए,ऐसा है सौंदर्य मेरा"

हमारे देश के गली-गली, राहों बाजारों में, नुक्कड-टपिरयों में, ग्राम देहातों में हिंदी ही स्वाभाविकता से बोली जाती है । दूरदर्शन के समाचार एवं सिरियलों में तथा खेलों के समाविवेचनों में हिंदी ही हिंदी की जयजयकार होती है । सबसे अधिक हमारे चित्रपट सृष्टी में हिंदी इतनी प्रचलित है कि, भारत के हिंदी चित्रपट विदेशों में हिट होते नजर आते है । किसी फिल्म का मशहुर संवाद 'तमिलनाडू', कर्नाटक, आंध्रप्रदेशों की जनता उनके अंदाज में बोलते है । देश को हिंदी ने इस कदर बाँधा है जैसे शहद में मक्खी । व्यापारियों, ने, उद्योगपितयों ने इस हिंदी को सरताज बना दिया है । हमारे संतों के प्रवचनों से हिंदी घर-घर में गूँज रही है । ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ हिंदी ने प्रवेश न किया हो ? जैसे यह भारत देश की सांस हो ।

देश में हिंदी बोलनेवालों के आंकडे देखें -

चेन्नई भारत का छठवां बड़ा महानगर हैं, जो तिमल भाषी है - यहाँ सन 1901 में 0.1% हिंदी मातृभाषी थे । सन 1991 में यह प्रतिशत 2.1% से बढ़ा अर्थात 21 गुना हिंदी मातृभाषी की तादाद बढ़ी । सन 2001 के जनगणनानुसार हिंदी बोली जानवालों की संख्या 258-422 मिलीयन थी । सन 2011 के ताजा जनगणनानुसार हिंदी बोली जानेवालों की संख्या 422-551 मिलियन तक बढ़ी । यह तो सरकारी आँकड़े (टाइम्स ऑफ इंडिया-सर्वे) है, परंतु वास्तिवकता कुछ और है- इस देश का 99% इन्सान हिंदी को समझता जरूर है और यही कारण है की यह देश को एक सूत्र में बाँधे हुए है। हिंदी भारत की शान है -

"घर आंगन में जैसे तुलसी दल, या सुहागन के भाल पर बिंदी, देवता के मुकुट पर जैसे फुल, देश भारत के भाल पर हिंदी "

"संसार एक कड़वा वृक्ष है, इसके दो फल ही अमृत जैसे मीठे होते हैं -एक मधुर वाणी और दूसरी सज्जनों की संगति।"

आज का जमाना

- डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि-।,प्रा.मौ.के,नागप्र

कोई टोपी तो कोई अपनी पगड़ी बेच देता है. मिले अगर भाव अच्छा तो जज की कुर्सी बेच देता है कोई मासुम लड़की प्यार में कुर्बान है जिस पर बनाकर विडियो उसका वो प्रेमी बेच देता है जला दी जाती है ससराल में अक्सर वो ही बेटी जिस बेटी की खातिर पिता किडनी बेच देता है तवायफ ही फिर अच्छी कि वो सीमित है कोठे तक पुलिस वाला तो चौराहे पर वर्दी बेच देता है। यह कलियुग है, कोई भी चीज नामुमिकन नहीं इसमें कली, फूल, फल, पेड़, पौधे सबको माली बेच देता है किसी ने मोहब्बत में दिल हारा है तो क्यों हैरत है लोगों को युधिष्ठीर तो जुंए में अपनी पत्नी हार जाता है। यहां ज्ञानी भी अज्ञान का उजाला फैलाता है और तेवर के पीछे ज्ञानी भी अपना ज्ञान बेच देता है। हम भी बिकने गए थे बाजार-ए-इश्क में क्या पता था वफा करनेवालों को लोग खरीदा नहीं करते मोहब्बत तो दिल देकर की जाती है साहब, लेकिन इस जमाने में चेहरा देखकर लोग सौदा करते है मुकाम वो चाहिए कि जिस दिन भी हारूँ जीतने वाले से ज्यादा चर्चे में रहुँ। चैन से रहने का हमको मश्वरा मत दीजिए अब मजा देने लगी है जिन्दगी की मुश्किलें यहाँ सिर्फ बातें होती है इंसानियत की लेकिन जज्बात और उनके ख्यालात में फर्क बहुत है। इस दुनिया में हर शख्स को नफरत है झूठ से, मैं परेशान हूँ ये सोचकर की फिर ये झूठ बोलता कौन है कदर तो किरदार की होती है वरना, कद में तो साया ही इंसान से बड़ा होता है। इसलिए जिंदगी बड़ी शिध्दत से निभाओ अपना किरदार की परदा गिरने के बाद भी तालियां बजती रहे।

चक्रवातीय विक्षोभ के पूर्वानुमान में उपयोगी चेतावनी ग्राफ़िक्स

- प्रकाश चिंचोले,स.मौ.वि-II, प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागप्र

चक्रवात की वज़ह से होने वाले आपदा प्रबंधन में पूर्व चेतावनी प्रणाली एक प्रमुख घटक है। निगरानी एवं चक्रवात के पूर्वानुमान, चेतावनी उत्पादों का निर्माण एवं प्रसार, आपदा प्रबंधकों के साथ समन्वय तथा भारतीय मौसम विज्ञान विभाग द्वारा जारी चेतावनी की विश्वसनीयता के बारे में जनता की धारणा में सुधार करना, चक्रवात की पूर्व चेतावनी प्रणाली में शामिल है।

चक्रवात चेतावनी प्रभाग, नई दिल्ली, प्रादेशिक विशेषीकृत मौसम विज्ञान केंद्र, नई दिल्ली (RSMC-उष्णकिटबंधीय चक्रवात) के रूप में भी कार्य कर रहा है। यह विश्व मौसम संगठन WMO/ ESCAP पैनल देश, जैसे, बांग्लादेश, म्यांमार, थाईलैंड, श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान और सल्तनत ऑफ़ ओमान के लिए उष्णकिटबंधीय चक्रवातों पर परामर्श प्रदान करता है। साथ ही यमन तथा सोमालिया जैसे देशों को भी चक्रवात संबंधी चेतावनी दी जाती है।

हिंद महासागर क्षेत्र में बनने वाले चक्रवातीय विक्षोभ की जानकारी, प्रादेशिक विशेषीकृत मौसम केंद्र के अंतर्गत चक्रवात चेतावनी प्रभाग द्वारा दी जाती है। क्षेत्रीय चक्रवात चेतवानी केंद्र ACWC एवं चक्रवात चेतवानी केंद्र CWC भी अपने-अपने उत्तरदायित्व क्षेत्र में अपनी वेबसाइट पर इसे प्रकाशित एवं प्रसारित करते है।

सामान्य स्थितियों में दिन में एक बार 'ट्रॉपिकल वेदर आउटलुक' 0300UTC के प्रेक्षणों के आधार पर 0600UTC को जारी किया जाता है, लेकिन जैसे ही किसी निम्न वायु दाब क्षेत्र की गहनता बढ़ती है, इस पर निगरानी बढ़ा दी जाती है। अवदाब की स्थिति में दिन में दो बार, 0300 तथा 1200 UTC पर आधारित, चक्रवात पूर्वानुमान जारी किया जाता है। चक्रवात की भीषणता हासिल करने पर हर तीन घंटे के अंतराल पर एक दिन में आठ बार, 00, 03, 06, 09, 12, 15, 18 और 21 UTC पर आधारित, चक्रवात पूर्वानुमान जारी किया जाता है। साधारणतया उपरोक्त प्रेक्षण समय के लगभग तीन घंटे के बाद पूर्वानुमान जारी किए जाते हैं। चक्रवात चेताविनयों को टेलीफोन, फैक्स, ईमेल, एस.एम.एस, वैश्विक दूरसंचार प्रणाली (GTS), आकाशवाणी, दूरदर्शन एवं अन्य प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से विभिन्न उपयोगकर्ताओं के लिए प्रेषित किए जाते हैं। वर्तमान में चेतावनी / परामर्श तथा संबंधित अन्य जानकारियों को चक्रवात प्रयोजन के लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग की एक समर्पित वेबसाइट (http://www.rsmcnewdelhi.imd.gov.in/) में अपलोड किए जा रहे है। वास्तविक समय पर उपलब्ध प्रेक्षणों के आधार पर इसे समय-समय पर अपडेट किया जाता है। हिंद महासागर में बनने वाले चक्रवातीय विक्षोभ की गतिविधियों के समय इन्हे ऑनलाइन देखा जा सकता है।

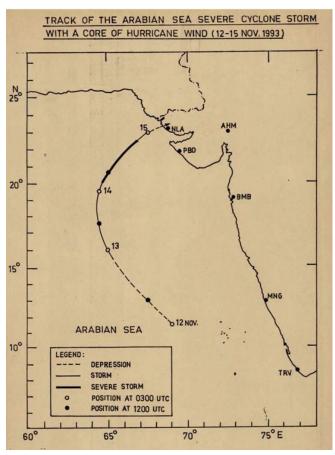
चक्रवात चेताविनयों को केंद्रीय और राज्य सरकार के अधिकारियों के लिए चार चरणों में जारी किया जाता है। इन्हें 'साइक्लोन वॉच', 'साइक्लोन अलर्ट','साइक्लोन वार्निंग','पोस्ट लैंड फॉल आऊटलूक' के नाम से जाना जाता है। जिन्हें प्रवेश स्थल के संभावित समय से अग्रिम में कम से कम क्रमशः 72, 48, 24 तथा 12 घंटे पूर्व जारी किए जाते हैं।

चक्रवात की स्थिति में टेक्स्ट ब्लेटिन का अपना एक विशेष महत्व होता है। इन पूर्व चेतावनी-

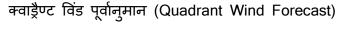
बुलेटिन में मुख्यत: चक्रवात की अद्यतन स्थिति, तीव्रता, इसकी संभावित आगे बढ़ने की दिशा, संभावित प्रवेश स्थल का स्थान और समय, संबद्ध भारी वर्षा, तेज हवा और तूफान महोर्मि(Surge), आदि जानकारियों सिहत प्रतिकूल मौसम से प्रभावित होने वाले क्षेत्र एवं मछुआरों, आम जनता, मीडिया और आपदा प्रबंधकों को सलाह देना आदि शामिल है। चक्रवात से संबंधित सम्पूर्ण जानकारी आपदा प्रबंधनकर्ताओं की आवश्यकता के अनुसार जारी किया जाता है।

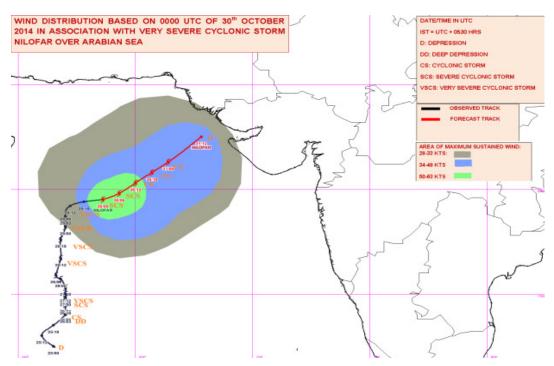
चक्रवात की अद्यतन स्थिति, तीव्रता, इसकी संभावित आगे बढ़ने की दिशा, संभावित प्रवेश स्थल का स्थान और समय संबंधित जानकारी को सरल तथा समझने योग्य बनाने के लिए इसे ग्राफ़िक्स फॉरमेट में भी प्रस्तुत किया जाता है। ग्राफ़िक्स फॉरमेट प्रस्तुतीकरण के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है कि चक्रवात की अद्यतन स्थिति कहाँ है और वह किस दिशा में आगे बढ़ रहा है तथा कौन सा क्षेत्र ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

पूर्वानुमान क्षमता में विकास को देखते हुए, भा.मौ.वि. ने ऑब्जेक्टिव चक्रवात पथ पूर्वानुमान, जिसकी वैधता 2009 में 72 घंटे के लिए मान्य थी, अब उसे 2013 से 120 घंटे तक जारी करना श्रू किया है।



उपरोक्त चित्र में वर्ष 1993 में अरब सागर में बने भीषण चक्रवात के पथ को दर्शाया गया है। इन्हीं चित्रों को अब कम्प्यूटर युग में आकर्षक और अधिक जानकारी युक्त रूप दिया जाने लगा है। वर्तमान में चक्रवात के अन्य उत्पाद के साथ साथ विशेष तौर पर दो तरह के ग्राफ़िक्स शामिल है। पहला क्वाड्रैण्ट विंड पूर्वानुमान (Quadrant Wind Forecast) तथा दूसरा अनिश्चितता का कोण (Cone of Uncertainty) का यहाँ विशेष उल्लेख किया जा रहा है।





चित्र 1 : 30 अक्टूबर 2014 , 0000 UTC पर अरब सागर पर बने अत्यधिक भीषण चक्रवात 'नीलोफर' के क्वाड्रैण्ट विंड पूर्वानुमान की चित्रमय प्रस्तुति

उपरोक्त ग्राफ़िक्स चित्र में, काले रंग का पथ प्रेक्षण के समय तक के आकड़ों पर आधारित प्रेक्षित पथ है। किसी निम्न वायु दाब के क्षेत्र को अवदाब की गहनता प्राप्त करने तिथि, समय तथा उसकी भौगोलिक स्थिति से लेकर प्रेक्षण के समय तक की स्थिति, साथ ही जैसे-जैसे इसकी गहनता बढ़ती या कम होती है, उसे अवदाब, गहन अवदाब, चक्रवाती तूफान, भीषण चक्रवाती तूफान, अत्यंत भीषण चक्रवाती तूफान, महाचक्रवात के नाम से सम्बोधित किया जाता है। उत्तर हिंद महासागर के उपर बनने वाले चक्रवाती विक्षोभ का वर्गीकरण टेबल -1 में विस्तार से दिया गया है।

लाल रंग में पूर्वानुमानित पथ दर्शाया गया है। चक्रवात की पूर्वानुमानित स्थिति और गहनता पर यह आधारित है। चक्रवात के किसी संभाव्य दिशा में बढ़ने का आकलन इस चित्र के माध्यम से आसानी से किया जा सकता है। सामान्य तौर पर प्रेक्षण समय के उपरांत हर छः घंटो के अंतराल पर केंद्रित बिन्दुओं पर एकत्रित की गयी जानकारी को इस ग्राफ़िक्स के माध्यम से समझने योग्य बनाया गया है। चक्रवात के केंद्र बिंदु से किसी भी दिशा में, किसी निश्चित परिधि में कितनी अधिकतम पवन गति हो सकती है, अलग अलग रंगों के माध्यम से इसे समझना आसान हो जाता है।

हरे रंग का क्षेत्र, रेडियस ओफ मैक्सिमम विंड अर्थात चक्रवात के केंद्र से अधिकतम पवन की परिधि को दर्शाता है। चक्रवात पवन की त्रिज्या (cyclone wind radii) 34 नॉट्स, 50 नॉट्स और 64 नॉट्स तक पहुँचने वाली हवाओं की अधिकतम रेडियल सीमा का प्रतिनिधित्व करती है। चक्रवात के प्रत्येक वृत्त का चतुर्थ (क्वाड्रैंट) (पूर्व-पश्चिम, पूर्वोत्तर, दक्षिणोत्तर, दक्षिण-पश्चिम) में जहाजों की आवश्यकता के अनुसार बनाये गए हैं।

प्रारंभिक अनुमान एवं चक्रवात पवन की त्रिज्या का पूर्वानुमान व्यक्तिपरक है, साथ ही डेटा की उपलब्धता, जलवायु और विश्लेषण के तरीकों पर निर्भर है।

उत्तरी हिंद महासागर पर दूरसंवेदी सतह हवाओं की जानकारी जैसे ओशन सैट, स्पेशल सेंसर माइक्रो वेव इमेजर (SSMI), निम्न स्तर वायुमंडलीय मोशन वैक्टर तथा एडवांस माइक्रोवेव साउंडर यूनिट (AMSU), डॉपलर वेदर रेडार, तटीय वायु प्रेक्षणों और वास्तविक समय पर डाटा विश्लेषण क्षमताओं के क्षेत्र में प्रगति के कारण भा.मौ.वि ने चक्रवात हवा त्रिज्या (cyclone wind radii) की निगरानी एवं पूर्वानुमान के लिए अक्तूबर, 2010 से इस तरह के चक्रवात के उत्पाद शुरू किये है।

विशेष उल्लेखनीय हैं कि चक्रवात के केंद्रीय क्षेत्र जिसे अंग्रेजी में EYE या चक्रवात का केंद्र कहते है, शांत (शीशे के समान) समुद्री दशा या फिर शांत (लहरदार) समुद्री दशा तथा समुद्र सतह पर मंद-मंद हवाओं के साथ शांत लहरें, जहाँ लहर की ऊंचाई शून्य से लगभग 0.1 मीटर तक हो सकती है। तदनुसार समुद्र की सतह पर हवा की गित मात्र शून्य से 5 या 6 किलोमीटर प्रति घंटे तक हो सकती हैं। एक ओर जहां चक्रवात के केंद्र में शांत हवाएँ होती हैं, वही केंद्र से कुछ ही दूरी, लगभग 20-40 किलोमीटर की दूरी पर तूफानी लहरों के साथ सबसे तेजः झंझा हवाएँ होती हैं, लगभग 200 - से 300 किलोमीटर प्रति घंटे के रफ़्तार से चलने वाली। तूफानों से होने वाले आपदाओं में इस भीषणता का असर कितना हो सकता, कल्पना की जा सकती हैं। चक्रवात के केन्द्रीय क्षेत्र से जैसे-जैसे परिधि बढ़ेगी अर्थात केंद्र स्थान से बढ़ती दूरी के साथ पवन की गित कम होने लगती है।

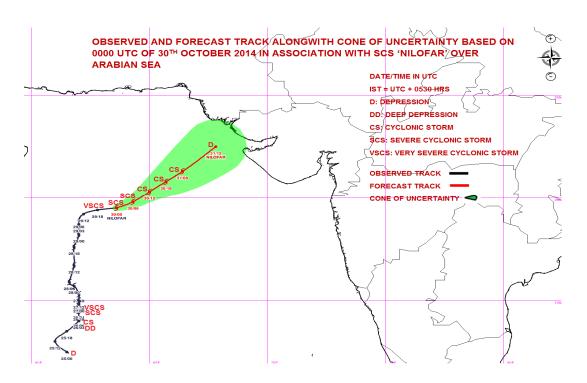
चक्रवातों की भीषणता एवं उसकी अधिकतम पवन की गित पर आधारित जानकारी को भिन्न श्रेणियों में विभाजित करते हुए, 25 से 33 नॉट्स , 34 से 49 नॉट्स , 50 से 63 नॉट्स तथा 64 नॉट्स से अधिक की पवन गित के लिए भिन्न-भिन्न रंगों का चयन करते हुए इस ग्राफ़िक में माध्यम से समझने योग्य बनाया गया है। आपदा प्रबंधनकर्ताओं के लिए प्रबंधन संबंधी सभी तैयारियां करने में सुविधाजनक सिद्ध होती है। नाविकों, मछुआरों के लिए यह जानकारी काफी उपयोगी है और वे निर्णय ले सकते है की ऐसे समय में समुद्र में किसी निश्चित क्षेत्र में जाना टाला जा सकता है।

अनिश्चितता का कोण (COU-Cone of Uncertainty)

चक्रवात के संभावित आगे बढ़ने की दिशा, लैंडफॉल का स्थान और समय की जानकारी इस तरह के ग्राफ़िक्स के माध्यम से समझा जा सकता है। अनिश्चितता का कोण चक्रवात के केंद्र और पूर्वानुमान पथ में होने वाली संभावित त्रुटि तथा पिछले कुछ वर्षों के पूर्वानुमान कौशल पर आधारित है, पूर्वानुमान पथ का प्रतिनिधित्व करता है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के पूर्वानुमान में दिसंबर, 2009 के दौरान चक्रवात 'वार्ड' से इस कोण का समावेश किया गया है। यह पूर्वानुमान में मानक पूर्वानुमान त्रुटियों को इंगित करता है अतः यह आपदा प्रबंधक निर्णायकगणों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हुए है।

अनिश्चितता के कोण का एक विशिष्ट उदाहरण चित्र -2 में दर्शाया गया है।



चित्र 2 : 30 अक्टूबर 2014 , 0000 UTC पर अरब सागर पर बने अत्यधिक भीषण चक्रवात 'नीलोफर' के दौरान प्रेक्षित एवं पूर्वानुमानित पथ के साथ अनिश्चितता के कोण की चित्रमय प्रस्तुति

चक्रवात के पथ में पिछले पांच वर्षों (2009-13) में पूर्वानुमान त्रुटियों में सुधार के कारण, हाल ही में, अनिश्चितता के कोण (COU) की त्रिज्या को विभिन्न पूर्वानुमान की अविध, 06, 12, 18, 24, 36, 48, 60, 72, 84, 96, 108 और 120 घंटे के पूर्वानुमान अविध के लिए क्रमश: 20, 30, 45, 60, 80, 100, 120, 135, 150, 160, 170 और 180 समुद्री मील की दूरी तक कम किया गया है, जो अक्टूबर 2014 में आए अत्यधिक भीषण चक्रवात 'ह्दह्द' से प्रभावी है।

उत्तरी अटलांटिक, प्रशांत महासागर तथा अन्य सागर घाटियों की तरह, 60-70% मामलों में चक्रवात का पथ पूर्वानुमानित अनिश्चितता के कोण के भीतर निहित है। यदि 6 घंटे पूर्व किये गए पूर्वानुमान के अनुसार यदि लैंडफॉल का वास्तविक स्थान किये गए पूर्वानुमान से 20 किलोमीटर के अन्दर होता है, तो यह एक अच्छे पूर्वानुमान का प्रतीक है। उल्लेखनीय है कि भारत मौसम विज्ञान विभाग के सटीक पूर्वानुमान के कारण औसत त्रुटी अब पहले की तुलना में अपेक्षाकृत काफी कम हो गयी है। लीड-अविध में वृद्धि के साथ-साथ चक्रवात के जनन, पथ, तीव्रता और संबद्ध प्रतिकूल मौसम के पूर्वानुमान में सटीकता में वृद्धि के कारण, तूफानों के कारण होने वाली आपदाओं के बेहतर प्रबंधन में कारगर साबित हुई है।

टेबल -1 : उत्तरी हिन्द महासागर के ऊपर बनने वाले चक्रवाती विक्षोभ का वर्गीकरण (2015 से)

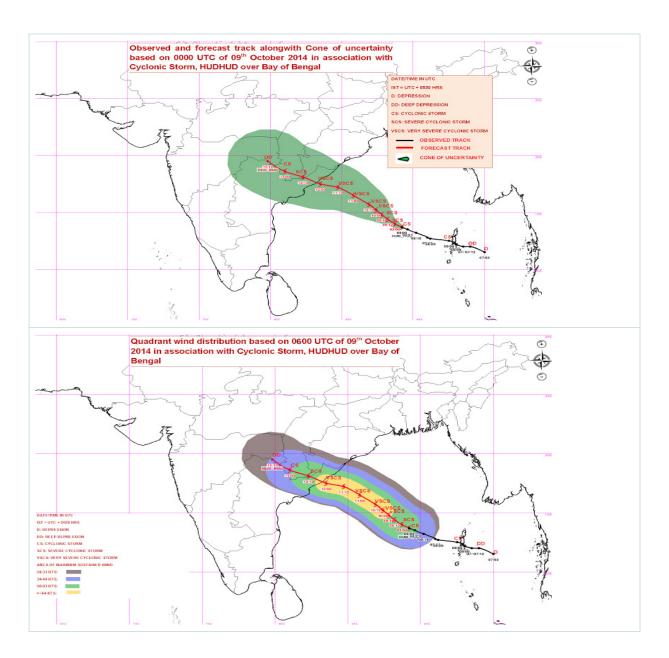
	आधार पर वर्गीकरण				2 hPa के अंतराल पर बंद समदाब रेखाओं की संख्या (5 डिग्री अक्षांश /देशांश चौरस क्षेत्र में)	न्यूनता या कमी ΔP (hPa)
निम्न वायु दबाव क्षेत्र - Low pressure area (L)	T 1.0	17 से कम	9 से कम	31 से कम	1	2
अवदाब Depression (D)	T 1.5	17-27	9-14	31-49	2	3.1
गहन अवदाब- Deep Depression (DD)	T 2.0	28-33	15-17	50-61	3	4.5
चक्रवाती तूफान - Cyclonic storm (CS)	T 2.5-3.0	34-47	18-24	62-88	4-7	6.1-10.0
भीषण चक्रवाती तूफान - Severe Cyclonic storm (SCS)	0 5	48-63	25-32	89-117	8-10	15.0
अत्यंतभीषण चक्रवाती तूफान- Very Severe Cyclonic storm(VSCS)	4.0-4.5	64-89	33-46	118-166	11-20	20.9-29.4
Extremely Severe Cyclonic Storm (ESCS)	T 5.0-6.0	90-119	47-61	167-221	21-39	40.2-65.6
ਸहा चक्रवात - Super Cyclonic Storm (SuCS)	T 6.5 -8.0	120 से अधिक	62 से अधिक	222 से अधिक	40 और अधिक	≥ 80.0

टेबल 2 : अनिश्चितता के कोण (COU)से संबंधित त्रिज्या (2009 -2013 के पूर्वानुमानों पर आधारित)

पूर्वानुमान लीड पीरियड (घंटे पूर्व)	अनिश्चितता के (2014 से पूर्व	कोण की त्रिज्या)		अनिश्चितता के कोण की त्रिज्या (2014 से प्रभावी)		
	किलोमीटर	नॉट्स	किलोमीटर	नॉट्स		
00	20	10	20	10		
06	40	20	40	20		
12	80	40	60	30		
18	120	60	90	45		
24	150	80	120	60		
36	220	115	160	80		
48	250	135	200	100		
60	310	165	240	120		
72	350	185	270	135		
84	380	205	300	150		
96	435	235	320	160		
108	490	265	340	170		
120	530	285	360	180		

लीड पीरियड : लैंडफॉल के वास्तविक समय से पूर्व पूर्वानुमान जारी करने की समयावधि.

अनिश्चितता के कोण की त्रिज्या : लैंडफॉल का वास्तविक स्थान और पूर्वानुमानित स्थान की दूरी में अनिश्चितता



चक्रवात 'हुदहुद' के दौरान, 9 अक्टूबर 2014 0000 UTC पर आधारित चित्र-3 (अ) प्रेक्षित एवं पूर्वानुमानित पथ तथा अनिश्चितता के कोण के साथ, एक विशिष्ट उदाहरण तथा चित्र-3 (ब) क्वाड्रैण्ट विंड पूर्वानुमान की चित्रमय प्रस्तुति

।। माँ ।।

- आर.एन.यादव, स.मौ.वि.-॥,प्रा.मौ.के,नागपुर

```
माँ तो माँ होती है।
      जन्म देनेवाली हो, कर्मभूमि या फिर जन्म भूमि, माँ तो माँ होती है।।
      लालन-पालन कर, पालने वाली, वो माँ होती है।
      उँगली पकड़ चलना सिखाये, वो माँ होती है
      सही राह जो दिखाये, वो ही माँ होती है,
      शेरनी सी निगाहें कभी-कभी, पर हृदय माखन सा, ऐसी केवल माँ होती है।।
      कितना ही बुढ़ा हो जाये इंसान, दुख आये और कराहे।
      तो अधरों पर नाम केवल माँ का ही आये।।
      माँ, दुर्गा, है, माँ सरस्वती, माँ शक्ति है।
      सारे तीर्थ वो पा जाये, करता चरणों में, इसके, जो भक्ति है।।
      मातुभक्त के सामने तो साक्षात ईश्वर झुक गये।
      इसलिये तो, भगवान विठ्ठल, ईंटों पर ही रूक गये।।
      जन्म देनेवाली, और मातुभूमि के बीच, हमारे वक्त,पहिया घुम रहा है।
      उनके सीने पर खेलकर हुये बड़े, ओर जीवन चल रहा है।।
      कोई भी हो, उऋण नहीं हो सकता, कर्ज है, इतने उनके।
      नत मस्तक कर, कर्तव्य निभा सकते, केवल चरणों में, वंदना कर उनके ।।
      आव्हान है वक्त रूपी परमात्मा का –
      माताओं को वृध्दाश्रम में भेजकर मातृत्व का अनादर ना करें।
      और अपनी मातृभूमि की रक्षा हेत्, प्राण हमारे, हमेशा तत्पर रहे।
      तब ही हमारी माता और जन्म भूमि का उध्दार होगा।
      और हम सभी के जीवन का सपना साकार होगा ।।
      सही मायनों में, विश्व में हमारी धरा हमारे देश का विशेष आकार होगा
      इस हेत्, मन बार-बार सोचता है, और यही सोचता है।
      "(माँ गर तू ना होती, तो मैं भी ना होता)
      माँ गर तू ना होती, तो ये संसार ना होता।
      जीने का कोई आधार ना होता ।।
      ना जमीं, ये आसमान ना होता।
      इंसान तो इंसान है, भगवान ना होता ।।
      कुछ सत्य ना होता किसी का अस्तित्व ना होता।
      भूत, भविष्य और ये वर्तमान ना होता।।
      माँ गर तु ना होती तो ना जाने क्या होता।
      माँ गर तू ना होती तो मैं भी ना होता
      माँ गर तू ना होती तो मैं भी ना होता।।
```

हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी

-डॉ.ग्रुदत्त मिश्रा,मौ.के,भोपाल

भारत में सामान्य तौर पर सूचना प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी की भूमिका अहम है।यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि अंग्रेजी भारत में व्यापक रूप से बोली जाती है, भले ही जनसंख्या का केवल 5% अंग्रेजी में औपचारिक रूप से द्विभाषी है भारत की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कम से कम कुछ अंग्रेजी बोलता है। अंग्रेजी भारत में अक्सर एक कुलीन परविरेश की निशानी के रूप में सोचा जाता है। यह ब्रिटिश शासन जहां किसी को भी आगे निकलना नहीं चाहता हैं जो भारत दुनिया में आगे निकलना चाहता हैं उसने अंग्रेजों के साथ सौदा किया है और आंशिक रूप में अंग्रेजी सीखने के लिए किया था।यहां तक कि इंटरनेट का प्रयोग अंग्रेजी बोलने के लिए किया था इन कारणों से लंबे समय से भारत में दोनों के लिए (हिंदी एवं अंग्रेजी), सूचना प्रौद्योगिकी प्रणालियों और अन्य उत्पादों के लाभ लेने के लिए भारत द्वारा ग्रहण किया गया है। हालांकि हाल के वर्षों में यह अब सच है और तथ्य यह है कि भारतियों को आप सबसे अधिक सॉफ्टवेयर और हिन्दी हाईवेयर विशिष्ट संस्करणों के प्रति सचेत प्राप्त कर सकते हैं।

इस बदलाव के लिए एक मुख्य कारण यह है कि हिन्दी न केवल भारत जो निश्चित रूप से गर्व की बात हैं हिंदी में तकनीकी जानकारी उपलब्ध करना होगा क्यूंकि यह आधिकारिक तौर पर सरकार की भाषा है लेकिन यह भी साधारण तथ्य यह है कि लगभग 350 मिलियन लोग पहली भाषा हिंदी बोलते है । सूचना प्रौद्योगिकी विश्व परिदृश्य पर प्रमुखता से भारत की सरल वृद्धि है। भारत अंतरराष्ट्रीय नीति में एक असली खिलाड़ी के रूप में परिपक्व होती है यह दोनों कंपनियों के लिए उसे लोग उसकी जरूरतों को पूरा करने के लिए और दूसरों पर अपनी संस्कृति पर जोर देते हुए शुरू करने के लिए स्वाभाविक है। इन दोनों पहलुओं को हिन्दी में सूचना प्रौद्योगिकी का एक प्रमुख हिस्सा आज बनाने के लिए गठबंधन किया जाना आवश्यक है।

अमेरिका वह देश है जहाँ टेक्नॉलॉजी की शुरूवात हुई परन्तु भारत की मदद के बिना वह आगे नहीं बढ़ सकती थी। कुछ बरसों में इंटरनेट पर जिन तीन भाषाओं का दबदबा होगा वे है हिंदी, मैंडरिन और इंग्लिश। भारत के सन्दर्भ में आईटी के इस्तेमाल को हिंदी और दूसरी भारतीय भाषाओं में ढ़ालना ही होगा क्योंकि हमारे पास संख्या बल है। हमारे पास पढ़े लिखे, समझदार और स्थानीय भाषा को अहिमयत देने वाले लोगों की तादाद करोड़ो में है। अगर इन करोड़ो तक पहुँचना है तो उसे भारतीयता, भारतीय भाषा और भारतीय परिवेश में ढ़लना होगा। इसे हम तकनीकी भाषा में लोकलाइजेशन कहते हैं। हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में मानकीकरण,(स्टेंडर्डाइज़ेशन) आज भी एक बहुत बड़ी समस्या है। यूनीकोड के जरिए हम मानकीकरण की दिशा में बढ़ चुके हैं। अगर आईटी में हिंदी का पूरा फायदा-

-उठाना है तो बहुत सस्ती दरों पर सॉफ्टवेयर मुहैया कराए जाने होंगे । प्रौद्योगिकी का प्रभाव

- 1 इंटरनेट के क्षेत्रीय समन्वय को बढ़ावा देता है।
- 2 पायलट परियोजनाओं को स्थापित करता है।
- 3 विकासात्मक दृष्टिकोण के लिए संचार का उपयोग करता।
- 4 इंटरनेट सेवा के प्रावधान और दूरसंचार बुनियादी सुविधाओं के लिए वकालत में हितधारकों को सहायता करते हैं।

मौसम सेवाओं के प्रसार में संचार व्यवस्था की भूमिका

आज के समाज की रचना कई तकनीकियों के आधार पर की है, जिसमें कम्प्यूटरों का प्रसार अधिक गित से हुआ है,आने वाले वर्षों में सूचना क्रांति के होने से कृषि एवं ग्रामीण विकास में कम्प्यूटरों की महत्ता का अनुमान लगाया जा सकता है। आज के इस प्रौद्योगिकी संसार में जनसंख्या वृद्धि भी एक सामाजिक अभिशाप बन गया है। आधुनिक समाज में विकास के हर मुकाम पर कम्प्यूटर के बिना विकास की गित को बढ़ाना या उसे स्थायी रखना न केवल कठिन अपितु असंभव सा प्रतीत होता है। रेडियों, ट्रांजिस्टर, टेलीफोन, सेलफोन, कम्प्यूटर, टेलीविजन, दूरसंचार उपग्रह, इन्टरनेट, विडियोफोन, विडियो कॉन्फ्रेंस, डिजिटल डायरी इत्यादि सूचना क्रांति के ही अंग है। आज एक माइक्रोप्रोसेसर जिसे हम आसानी से अपनी जेब में रख सकते है एवं छोटे लेपटॉप जो सस्ते तथा सुलभ है, पहले दूरसंचार में हमारा ज्ञान टेलीप्रिन्टर, मोर्सकोड जैसे बेतार यंत्र तक ही सीमित था जिससे सूचनाएँ भेजी जाती थी आज काफी तीव्र गित वाले संचार तंत्रों का जाल उपलब्ध है जिससे कम समय में अधिक से अधिक सूचनाएँ भेजी जा सकती है। अब तो गाँव-गाँव घर तक इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है गाँवों में मोबाईल टावर का विस्तृत जाल है। आज पहली कक्षा का बच्चा भी इस नई सूचना तकनीकि का उपयोग अच्छे से कर सकता है।

भारत एक कृषि प्रधान देश है ,हमारे कृषकों ने हरित क्रांति के उपरांत निःसंदेह खेतों में सोना ही उगाया है जिसके कारण आज हम न केवल खाद्यान में आत्मनिर्भर है ,बल्कि उनका निर्यात भी करनें में सक्षम है ।

कम्प्यूटर तथा लेपटॉप

यह उत्तम दिशा निर्देशन योजनानुसार कार्यक्रम क्रियान्वयन,उत्कृष्ठ वैज्ञानिक परिणाम का नतीजा है। आधुनिक सूचना तकनीकि से कम्प्यूटर द्वारा देश में फैले विभिन्न विक्रय केन्द्रों के आंकडों के आधार पर आगामी उत्पादन संबंधी निर्णय किए जाते है अभियांत्रिकी प्रक्रियाएँ स्वचल मशीनों द्वारा पूर्ण की जा रही है। इन स्वचल मशीनों को प्रक्रियानुसार आधार सामग्री कम्प्यूटर द्वारा दी जाती है। घनी एवं अधिक जनसंख्या वाले शहरों में यातायात के संकेत भी संगठन द्वारा नियमित किए जा रहे है किसी भी सिंचाई परियोजना की सम्भावना और आर्थिक उपयोगिता देखनें के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण से बहुत अधिक जानकारी, सर्वेक्षण डाटा, मौसमी आंकडे इत्यादि को एकत्रित करना एवं उनका विशलेषण करना कम्प्यूटर से काफी आसान एवं गतिशील हो गया है। अधिक फसल का उत्पादन एवं कम लागत के लिए आप्टिमाइजेशन तकनीिक भी सूचना क्रांति एवं कम्प्यूटर के कारण सहज एवं सर्वोपयोगी हो सकी है। जल सिंचन योजना का आर्थिक उपयोगिता जानने के लिए पूर्वेक्षण किया जाता है। इसमें भूमि का जल सिंचनीय योग क्षेत्रफल ,इसके अलग-अलग गुण धर्म उनके लिए उपयुक्त फसल अनुक्रम जिसमें ज्यादा से ज्यादा उत्पादन होगा। यह सब जात करना पडता है, इसके लिए इन सब प्राचलों का क्रमवय और संयोजन करके उपलब्ध होने वाले पानी की गुणवत्ता और मात्रा के अनुसार किस तरह का फसल अनुक्रम फायदेमंद होगा, यह सुनिश्चित करना कम्प्यूटर के माध्यम से आज अत्यंत सरल हो गया है।

जलवायु के साथ-साथ जिस प्रकार पूरे देश में मृदा के प्रकार एवं उर्वरा शक्ति में परिवर्तन हो रहा है । वर्षा ताप, आद्रता, वायुवेग में परिवर्तन होते है । इस सभी को ध्यान में रखते हुए फसल का चयन एवं बीजारोपण, सस्य तकनीकों का उपयोग करना पड़ता है ।

डॉप्लर वेदर राडार

प्रत्येक मृदा की उर्वरता के अनुसार उसमें रासायनिक उर्वरक डाला जाना, कब एवं कितनी मात्रा में सिंचाई करना किस प्रकार का कीटनाशक रसायन कितनी मात्रा में फसल पर छिड़कना है , इन सबकी गणना करना एवं प्रत्येक कृषि जोन ,प्रक्षेत्र ,तथा फसल के लिए जोताना ,मानव अकेले के बस की बात नहीं रह गयी है , अपितु ये सभी जिटल कार्य कम्प्यूटर के लिए कुछ सेकेन्डों का है । बस कुछ प्रारंभिक डाटा की आवश्यकता पड़ेगी और सभी सूचनाएँ कुछ ही समय में मिल जायेंगी । नए सूचना संचार साधनों के विकास के साथ -साथ कम्प्यूटर के उपयोगों की माँग भी बढ़ती जा रही है। कम्प्यूटरों का उपयोग नए-नए क्षेत्रों में हो रहा है। इससे समय की बचत ,उत्पादकता में वृद्धि एवं सूचना संचार व्यवस्था में काफी गित आई है । आज कल सरकार द्वारा इस नई तकनीिक द्वारा किसान भाइयों को जमीन, खसरा, रिकार्ड इत्यादि को देखने तथा प्रतिलिपि की तत्काल की सुविधा है घर बैठे किसान अपनी जमीन का रकवा,कृषि जोत ,तथा बोई गई फसल का रिकार्ड म.प्र.शासन की भू अभिलेख की साइट में जाकर देख लेता है । इससे बाबू या पटवारी द्वारा गुमराह करने या सतानें जैसी बातों से मुक्ति मिल गई है । म.प्र.सरकार ने भूमि रिकार्ड को कम्प्यूटरी कृत करने का कार्य लगभग पूरा कर दिया है । इससे पारदर्शिता एवं दक्षता के बारे में इस तकनीिक का जावाब नहीं । भौगोलिक स्थिति एवं संचार व्यवस्था के अनुसार विभिन्न स्थानों पर सूचना केन्द्र स्थापित किए गए है इन सूचना केन्द्रों को कम्प्यूटर परिपथों द्वारा आपस में जोड़ा जाता है इस प्रकार के केन्द्रों द्वारा शासकीय सूचनाएँ कम समय में प्राप्त की

जा सकती है।

स्वचलित मौसम केन्द्र

भारत सरकार मौसम विज्ञान विभाग भी अपनी इस सूचना क्रांति द्वारा आम जनता का किसानों को आगामी पूर्वानुमान के लिए उपयोग किया जा रहा है। प्रत्येक जिला स्तर पर स्वचलित मौसम केन्द्र तथा तहसील स्तर पर स्वचलित वर्षा मापक यंत्र लगाए गए है।

जो कि सोलर बैटरियों की सहायता से कम्प्यूटर नेट की सहायता से क्षण-क्षण मौसम की जानकारी पूणे स्थित केन्द्र पर संगणित होकर मौसम विभाग की वेब साइट पर तत्काल उपलब्ध है । उसी प्रकार कृषि मौसम एकक सलाहें जो कि हर राज्य का मौसम केन्द्र प्रत्येक मंगलवार तथा शुक्रवार को आगामी पाँच दिनों के लिए जारी करता है इसमें राज्य की भौगोलिक संरचना तथा उस स्थान पर बोई जानें वाली फसल के लिए मौसमीय तत्व तथा कृषि कॉलेजों की सहायता से बीज का चयन ,बचाव के तरीके कीटनाशकों का छिड़काव तथा बचाव के उपाय की सलाहें एक संयुक्त समाचार प्रसारण जारी करता है जो कि मौसम विज्ञान विभाग की वेब साइट तथा अन्य माध्यमों,आकाशवाणी ,दूरदर्शन ,समाचार पत्र, जिला तहसील स्तर के कृषि अधिकारी तथा मेल एस एम एस द्वारा विभिन्न कंम्पनियों की सहायता से प्रेषित की जाती है । साथ ही किसानों द्वारा मौसम विभाग की टोल फ्री सेवा 18001801717 पर 24×7 घंटों उपलब्ध है एवं प्रादेशिक स्तर पर मौसम केन्द्र तथा राज्य के अन्य शहरों के मौसम केन्द्रों पर फोन द्वारा भी जानकारी ली जाती है। किसी भी क्रांति के शुरूवात में अनेक प्रकार की कठिनाईयाँ एवं अडचनें आते है तथा भिन्न-भिन्न प्रकार की भ्रांतियाँ भी उपजती है लेकिन जब विधिवत स्थापित हो जाता है तो उसका फल मिलना श्रूक हो जाता है।

जब कम्प्यूटर के उपयोग का जिक्र होता है तो निश्चित ही एक ऐसी कार्य पद्धित का विचार मन में आता है जो ज्यादा भरोसेमंद सही तथ्यों के उपर आधारित एवं कुशलता से परिपूर्ण हो ताकि हमारे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र को अधिक खुशहाल एवं विकसित होनें में मदद मिल सके ।

भारत एक कृषि प्रधान देश है। किसी भी कृषि प्रधान देश की प्रगति तथा उसका आर्थिक विकास कृषि पर निर्भर करता है। जिस प्रकार देश का आर्थिक विकास कृषि पर निर्भर करता है उसी प्रकार कृषि का विकास एवं प्रगति उस देश की जलवायु एवं मॉनसून पर निर्भर है। मॉनसून का समय पर आना अथवा विलम्ब से आना दोनों स्थितियाँ ही कृषि को प्रभावित करती है यदि कृषकों को मॉनसून के बारे में कुछ पूर्वानुमान की जानकारी हो तो वे अपनी फसल को और अधिक उपजाऊ भी बना सकते है तथा प्राकृतिक आपदाओं जैसे कि सूखा आदि से बचा भी सकते है। अगर हम एक उदाहरण दें कि कृषक को मॉनसून के बारे में कोई पूर्वानुमान नहीं है और न कोई जानकारी है कि मॉनसून कब आयेगा तो मॉनसून की प्रतिक्षा में उसकी फसल नष्ट होनें की सम्भावनाएँ बढ़ सकती है। अतः मौसम विज्ञान कृषकों के लिए

एक वरदान साबित होता है। वैसे तो मौसम विज्ञान हर साधारण मनुष्य एवं जीव-जन्तुओं को किसी ना किसी रुप में प्रभावित करता है लेकिन कृषि के क्षेत्र में उसकी भूमिका अतुलनीय है।

भारत एक विकासशील देश है यहाँ की 70 प्रतिशत जनता गाँवों में निवास करती है । भारत की अर्थ व्यवस्था में मानसून का बहुत बड़ा योगदान है । अतः मौसम की भविष्य वाणी से अर्थव्यवस्था पर प्रभाव पड़ता है । अतःसमय पर सूचनाओं का पहुँचना बहुत जरूरी है, इसके संचार प्रणाली का उपयोग मौसम विज्ञान विभाग द्वारा किया जाता है। इससे त्वरित सूचनाएँ आमजन तक पहुँच जाती है ।

विगत दिनों नेपाल में आए भूकम्प की जानकारी हमारी वेब साइट तथा अन्य फोन के द्वारा शीघ्र लोगों तक पहुँचाई गई। ग्रामीण कृषि मौसम सेवा के अंतर्गत कृषि मौसम सलाहें वेब साइट तथा किसान पोर्टल सेवा में एसएमएस के द्वारा किसानों को तुरन्त मिल जाती है। मौसम केन्द्रों में 24×7 घण्टे फोन करनें पर आम आदमी कभी भी मौसम ले सकता है। देश में टी.वी चैनल, न्यूज पेपर या मौसम एप्स से तुरन्त जानकारी लोगों तक पहुँच जाती है। बाढ़ चेतावनी, झंझावात या अन्य हर तरह की मौसम चेतावनी प्रदेश सरकार तथा अन्य संचार माध्यम रेडियो, टीवी से शीघ्र पहुँच जाती है। वर्षा के आंकडे आम जनता तक नई सूचना प्रणाली से मिल जाते है।

मौसम सेवाओं के लिए हमारी मौसम विभाग की वेबसाइट में हर तरह की जानकारी देश के बड़े शहरों का तापमान, मानसून, तूफान, कृषि मौसम, भूकम्प आदि हर तरह की जानकारी उपलब्ध है । भारत के लिए ब्लाक तहसील स्तर पर ए.डब्लू एस/ए आर.जी लगाए गए है । जो कि सेटेलाइट के माध्यम से हर घण्टे तापमान, वर्षा, हवा की दिशा,रफ्तार,दबाव,आदि घर बैठे इन्टरनेट के द्वारा प्राप्त हो सकती है । लोगों को मौसम की सूचनाएँ अब फोन पर एसएमएस के जरिए उपलब्ध हो रही है । दिनांक 25 दिसम्बर 2014 को गुड गवर्नेस डे के मौके पर इस सेवा की शुरूवात हुई । इसके तहत कोई भी व्यक्ति अपने मोबाईल फोन को मौसम विभाग के पास दर्ज कराकर मौसम की चेतावनी की सूचनाएँ घर बैठे हासिल कर सकता है । जिससे आम जनता मौसम का आगे का मिजाज भाप सके । और इसके अनुसार अपनी यात्रा और अन्य कार्यक्रमों की योजना बना सके । यदि भारी बारिश,घने कोहरे की आशंका है तो लोगों को चार-पाँच घण्टे पहले ही मोबाईल पर एसएमएस के जरिए इसकी सूचना मिल जाएगी । इससे लोग अपने कार्यक्रम में आवश्यक बदलाव कर सकेगें ।

विगत वर्ष उत्तराखण्ड में हुई त्रासदी की पूर्व सूचना होते हुए भी लोगों तक इसलिए नहीं पहुँचाई जा सकी क्योंकि इस किस्म की सेवा उपलब्ध नहीं थी । लेकिन अब मौसम विभाग ने इसके लिए आवश्यक तकनीिक क्षमता हासिल कर ली है । यह सेवा निशुल्क रखी गई है । मौसम विभाग अभी भी दिल्ली समेत कई स्थानों पर नाउकास्ट सेवा देता है। जिससे प्रत्येक चार घण्टे में आगे के मौसम की सूचना दी जाती है । यह सूचना अभी वेबसाइट पर उपलब्ध है ।

मेरे देश के नेता

- आर.डी.मेश्राम, स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागपुर

देश में मेरे,ऐसे भी नेता होते है सिर पर जिनके दिखता काँटों का ताज, फूलों की सेज पर वो सोते हैं, मुँह में इनके गुलाब जामुन, मगरमच्छ के आँसु ये रोते है, देश में मेरे ऐसे भी नेता होते है।

शुभ्र वस्त्र, गांधी टोपी, धारण ये सब करते है, बंदुकधारी रक्षक इनके, मुजरिमों की संगत में रहते हैं, मुँह में इनके होता है 'राम' बगल में छूरी रखते है, देश में मेरे ऐसे भी नेता होते है ।

> देने को ढ़ेर वादों की टोकरी लेने को नोटों की गठरी लेते है, चुनाव से पहले बनते बगुला -भगत फिर हंस की चाल ये चलते है,

देश में मेरे ऐसे भी नेता होते हैं।
मेरे देश का ये जो नेता,
समझता स्वयं को महान वक्ता,
अक्ल और शक्ल नहीं होती इनकी,
केवल कोरी डींग है हाँकता,
बातों पर अपनी ये कभी कायम नहीं रहते,
गिरगिट से भी ज्यादा रोज ये रंग बदलते है,
देश में मेरे ऐसे ही नेता होते है।

"साधारण और असाधारण में अंतर सिर्फ थोड़े सी ज्यादा मेहनत का है." - जिमी जॉन्सन

सटीक मौसम पूर्वानुमान देने में उच्च तकनीकी कम्प्यूटर संजाल का योगदान

(Contribution of High Technical Computer Network in Accurate Weather Forecasting)

- पी.एल.देवाँगन, स.मौ.वि-I,मौ.के,रायपुर

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। पृथ्वी पर अस्तित्व प्राप्त सभी जीव-निर्जीव परिवर्तनषील होते हैं। इसका प्रमुख कारण प्रायः प्राकृतिक घटनाचक्र ही होती हैं। कई बार मानव निर्मित घटनायें भी परिवर्तन में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। एक ओर भूकम्प, ज्वालामुखी, अतिवृष्टि, आंधी-तूफान, भयंकर बीमारियां, भूस्खलन आदि प्राकृतिक घटनायें तो दूसरी ओर युद्ध, बम-विस्फोट, जहरीली गैसों का रिसाव, भूखमरी, सामूहिक पलायन आदि मानव-जनित विभीषिकायें पृथ्वी पर दषा परिवर्तन के प्रमुख कारक होती हैं। ये घटनायें आपदाजनक तो होती ही हैं, पर कभी-कभी वरदानस्वरुप भी साबित हो जाती हैं। ऐतिहासिक काल से वर्तमान तक मानव मात्र जीवन के सभ्यता-असभ्यता की आँख-मिचैली खेल कई बार खेल चुका है। इसमें कई भयानक जीवधारी लुप्त प्राय हो चुके हैं तो अनेक नये सूक्ष्म रोगाणुओं की खोज भी होती जा रही है।

आदि मानव के खाना-बदोष जीवन शैली से लेकर आज की मशीनीकृत, कम्प्यूटरीकृत व भविष्य में संभावित रोबोटिक व रिमोट संचालित जीवन शैली तक के परिवर्तन लाने का मुख्य सूत्रधार मानव मस्तिष्क ही रहा है। इतना ही नहीं,, बीहड़ जंगलों से लेकर अलौकिक स्वर्ग-सुख प्रदायिनी भव्य अद्टालिकाओं व विनिर्माणों तक का परिवर्तन भी मानविक कुशाग्र बुद्धि की ही देन है। इन परिवर्तनों के लिये मानव हमेशा प्रकृति का यथोचित दोहन करता रहा है तथा प्रकृति की अनुकूलता-प्रतिकूलता से दो-दो हाथ करना पड़ा है। यहाँ तक कि कई बार तो मानव प्रकृति को भी मात देने की असफल प्रयास कर चुका है जिसके तहत ब्रहमांड की उत्पत्ति विषयक खोज के लिये ग्रहों की सैर, लार्ज हैड्रन कोलाइडर जैसा विस्फोट आदि के साथ ही पूर्वघटित विभीषिकाओं पर अधिकतम विजय पाने का पुरजोर प्रयास किया गया है। बड़े-बड़ै बांधों के निर्माण, परमाणु शस्त्रों के अनुसंधान, स्वचालित उपकरणों की खोज, अत्याध्निक उपग्रह आधारित संचार व खोज व्यवस्था के प्रावधान आदि अनेक उदाहरण हैं जो प्राकृतिक विपदाओं से निपटने में मानव मात्र को मानसिक व भौतिक दृष्टि से तत्पर बनाती हैं। आज स्थिति यह है कि कम्प्यूटरीकृत संचार माध्यमों व उन्नत सूचना तकनीकी के द्वारा समग्र विश्व एक छोटी-सी कम्प्यूटर माउस के क्लिक में सिमट आया है। नये-नये व्यपारिक व्यवहार, वैज्ञानिक शोध, खेल व मनोरंजन के साधन सब-क्छ इसी कम्प्यूटर में अन्तर्निहित-सा हो गया है।वस्तुतः मानव जीवन पाँच तत्वों से मिलकर बना है। ये तत्व हैं -धरती, आकाश, अग्नि, जल और वायु। इन्हीं तत्वों के विभिन्न अनुपात में मिश्रण से मौसम का विनिर्माण होता है। अतएव इन्हें मौसमी तत्व के नाम से जाना जा सकता है। इन मौसमी तत्वों को जीवनानुकूल बनाने के -

-लिये इनकी अतिरेक परिवर्तन पर अध्ययन की आवश्यकता होती है जिससे मानव जीवन को विभीषिकाओं से यथासंभव बचाव का प्रयास भी किया जा सकता है जो इनके पूर्वानुमान द्वारा संभव हो पाता है। अतएव यह तथ्य सारगर्भित है कि मौसमी घटनाओं का घटनाकाल से पूर्व अनुमान लगाया जाना ही मौसम पूर्वानुमान है। किसी निर्धारित अविध और स्थान के लिये वायुमंडल की स्थिति का अनुमान लगाने के लिये विज्ञान और तकनीकी के प्रयोग से सटीक मौसम पूर्वानुमान जारी किया जा सकता है। वर्तमान मौसमी तत्वों के मात्रात्मक आंकड़ों के एकत्रीकरण एवं भविष्य के मौसमी क्रियाओं पर वैज्ञानिक अध्ययन के द्वारा मौसम पूर्वानुमान तैयार किया जाता है।

वर्तमान में पूर्वानुमान अनेक तथ्यों पर किया जाता है, किन्तु मौसम पूर्वानुमान सर्वाधिक सफल व समाजोपयोगी सिद्ध हुआ है। आवश्यकता इस बात की है कि मानव जीवन को प्रभावित करने वाले सभी कृत्रिम व प्राकृतिक विभीषिकाओं के पूर्वानुमान किया जाये। अकेले मौसम में ही प्रत्येक तत्व का पृथक-पृथक शैली में पूर्वानुमान की आवश्यकता होती है। मौसम पूर्वानुमान निम्नांकित कारणों से आवश्यक होती हैं:-

- मौसमी विनाशलीला से जनता को सजग रखने व सुदृढ़ बचाव तैयारियों के व्यवस्थापन में,
- 2. जीवनोपयोगी व स्वास्थ्यवर्धक वातावरण के निर्माण के लिये उचित संसाधन जुटाने में,
- 3. आगामी कृषि व अन्न उत्पादन के आकलन में तापमान और वर्षा सम्बन्धी जानकारी के लिये,
- 4. सामाजिक व आर्थिक नीति-निर्धारण में,
- 5. संभावित दुर्घटना की क्षतिपूर्ति स्वरुप आवष्यक धनराशि जुटाने में,
- 6. राष्ट्रीय-अंतराष्ट्रीय पलायन रोकने के लिये विकास योजनाओं के व्यवस्थापन में,
- 7. आवागमन व संचार साधनों के स्व्यवस्थित संचालन व रख-रखाव में,
- 8. जलाशयों में जलसंग्रहण योजनाओं के निर्धारण में,
- 9. विमानन, समुद्री यातायात, पर्यटन, बागवानी, व्यापार आदि के सरल संचालन में,

ऐतिहासिक काल में ईसा पूर्व 650 में बेबीलोन के शिक्षाविदों द्वारा बादलों की पहचान खागोल शास्त्र की सहायता से किया गया था। ईसा पूर्व 340 में अरिस्टोटल द्वारा मेट्योरोलाजिका में मौसम के विभिन्न पहलुओं को वर्णित किया गया था। तत्पश्चात थ्योप्रास्थस ने मौसम पूर्वानुमान पर बुक ऑफ साइन नामक एक किताब की रचना की। इन्हीं दिनों ईसा पूर्व 300 में चीन के लोगों द्वारा मौसम पूर्वानुमान जारी किया। मौसम पूर्वानूमान के लिये कुछ कहावतों का उपयोग किया जाता था, जैसे कि - रात्रि में लाल आकाश, गइरिया की मुस्कान, प्रातः लाल आकाश गइरिये को चेतावनी, प्रातःकालीन सूर्य की चमक और पश्चिम की ओर बादल किसी अवदाब या आर्द्र प्रणाली के संध्या में आगमन का सूचक तथा सायंकाल सूर्य की चमक और-

-पुर्व की ओर बादल किसी अवदाब या आर्द्र प्रणाली के गुजरने का सूचक आदि।

भारत में सबसे पहले मौसम पूर्वानुमान ईस्वी सन् 904 में खगोलविदों द्वारा चन्द्रमा के विभिन्न चक्र के अध्ययन से किया गया। वर्तमान में भी खगोलविदों द्वारा ग्रहीय गित के आधार पर पूर्वानुमान किया जाता है। बीसवीं सदी में मौसम पूर्वानुमान की दिशा में आश्चर्यजनक उन्नित हुई है। वर्ष 1922 में लेविस फ्राय रिचर्डसन द्वारा न्यूमेरिकल वेदर प्रिडिक्शन (Numerical Weather Prediction) की अवधारणा का बीज बोकर पूर्वानुमान के क्षेत्र में ऐतिहासिक परिवर्तन ला दिया। न्यूमेरिकल वेदर प्रिडिक्शन की इस अवधारणा को वर्ष 1955 में प्रायोगिकतः मूर्त रुप प्रदान किया गया। इसके तहत मौसम कारकों के विभिन्न मान को सांख्यिकी व गणितीय माडलों के आधार पर गणना कर पूर्वानुमान जारी किया जाता है।

मौसम पूर्वानुमानों के लिये सघन व लघु अंतरालों के मौसमी प्रेक्षणों के अलावा कुछ ऐसे स्थानों के प्रेक्षणों की आवश्यकता होती है जहाँ वर्तमान में वेधशाशाला का प्रवधान नहीं किया गया है। मौसमी पूर्वानुमान के लिये मुख्यतः वायु दिशा व गित के साथ-साथ आर्द्रता की उपलब्धता, तापमान व वायुदाब में परिवर्तन, बादल और वर्षा के निर्माण आदि के गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है। ऊँचाई में आर्द्रता की उपिथिति निकट भविष्य के गीले मौसम की सुचना देती है। मौसम के बेहतर अनुमान के लिये आर्द्र प्रणालियों, निम्न वायुदाब क्षेत्रों अवदाबों, चक्रवात, प्रतिचक्रवात, उच्च वायुदाब क्षेत्र आदि के अध्ययन की आवश्यकता होती है। इसके लिये मौसम वैज्ञानिकों द्वारा सिनाप्टिक चार्ट में विभिन्न स्तरों के समतापीय, समदाबीय, वायु-प्रवाह दर्शी आदि रेखायें खींचकर उच्च अथवा निम्न दाब प्रणालियों की उपस्थिति-अनुपस्थिति जात किया जाता है। सिनाप्टिक चार्ट में प्रविष्टि के लिये आंकड़े देशभर के सतही व उच्च-वायु वेधशालाओं में लिये जाने वाले प्रेक्षणों से प्राप्त की जाती है, जिन्हें सार्वजनिक संचार माध्यमों द्वारा विभिन्न मौसम पूर्वानुमान केन्द्रों में भेजा जाता है। इसके अलावा अत्यंत उच्च तकनीकी वाले राडार व, उपग्रह से प्राप्त चित्रों की सहायता से वायु, ताप, दाब, आर्द्रता आदि के आँकड़े संग्रहित किये जाते हैं। तत्पश्चात् एक ऐसी युक्ति की आवश्यकता होती है जो इन आँकड़ों के समन्वय से सटीक व विश्वसनीय पूर्वानुमान का निर्माण कर सके। पूर्व में समन्वयीकरण का यह कार्य मानविक मस्तिष्क के उपयोग से सम्पन्न किया जाता रहा है जिन्हें मौसम विज्ञानी कहा जाता है।

विभिन्न सतही वेधशालाओं, उच्चवायु वेधशालाओं, राडार व उपग्रह आदि से आंकड़ों के प्रेक्षण से लेकर मौसम पूर्वानुमान केन्द्रों तक उनके प्रेषण, चार्ट का निर्माण, चार्टों के एनालिसिस व पूर्वानुमान का निर्माण आदि का कार्य मानविक मस्तिष्क द्वारा किये जाने में विभिन्न प्रकार की कठिनाईयाँ आती हैं। उदाहरणतया - समुद्री स्थानों पर वेधशाला का न होना, सुव्यवस्थित संचार साधनों की अनुपलब्धता, अधिक से अधिक मानव मस्तिष्क व समय की आवश्यकता, मानविक गलतियों की अधिकाधिक संभावना आदि। इतना ही नहीं, स्थलीय क्षेत्रों में भी वेधशालाओं और संचार व्यवस्था के मकड़जाल लगाने की आवश्यकता के साथ ही बड़ी मात्रा में-

-मानवशक्ति व उपकरणों की सेवायें ली जाती है। इसके अलावा एक ही समय में लिये जाने वाले प्रेक्षण आंकड़ों को यथाशीघ्र देश-विदेश में संचारित किया जाना होता है तािक आवश्यक पुर्वानुमान आंकड़े उचित समय में राष्ट्रीय केन्द्रों पर उपलब्ध हो सके। प्रकृति की अनिश्चितता के कारण आज भी वायुमंडल को परिभाषित करने, प्रारंभिक अवस्था की माप में होने वाली त्रुटियों तथा वायुमंडलीय क्रियाओं के अपूर्ण अध्ययन ने पूर्वानुमान को त्रुटिपूर्ण बना रखा है।

अत्याध्निक उपग्रहों, राडार तकनीकी व सूचना तकनीकी की सहायता से ऐसी प्रेक्षणशालायें जैसे-स्थलों में प्रयुक्त स्वचालित मौसम प्रणाली (A.W.S.), उपग्रह में प्रयुक्त अति उच्च सुग्राहय रेडियोमीटर (V.H.R.R.) विकसित की गई हैं, जिनसे मौसम पूर्वानुमान के लिये आवश्यक आंकड़े व संसाधन जुटानें में कम्प्यूटर के माउस क्लिक से ही प्रेक्षण कार्य बड़ी आसानी से किया जाता है। कम्प्यूटरों द्वारा ही राडार व उपग्रह से प्राप्त चित्रों को मनचाहे आकार व रुप से समन्वित किया जाता है। संचार आदि का कार्य कम्प्यूटर आधारित इंटरनेट प्रणाली से कुछ ही सेकंड में पूरे विश्व के लिये किया जाता है। सिनाप्टिक चार्ट का निर्माण और उनका एनालिसिस के द्वारा निम्न दाब प्रणालियों की पहचान अब चंद मिनटों में ही किये जा रहे हैं। कुछ वर्षों पूर्व भारत मौसम विज्ञान विभाग द्वारा फ्रांस के मौसम एजेंसी मिटियो फ्रांस इंटरनेशनल (M.F.I.) से कम्प्यूटर आधारित पूर्वानुमान माडल का सिनर्जी साफ्टवेयर खरीदा गया है जो सभी संभावित आंकड़ों का समन्वयीकरण कर त्वरित पूर्वानुमान जारी करने में पूरी तरह सक्षम है। इसके अलावा जीएफएस माडल, डब्ल्युआरएफ माडल, स्काइमेट आदि विभिन्न पूर्वानुमान माडल भी उपलब्ध हैं। कहना न होगा कि कम्प्यूटर संजाल ने इस पूरी प्रक्रिया को इतना त्वरित बना दिया है कि पूर्व में जहाँ दिन-भर में एक ही बार पुर्वानुमान संभव होते थे वहाँ अब मनचाहे कम अंतराल में नवीनतम आंकड़ों द्वारा पूर्वानुमान सरलता से जारी किये जाते हैं। इंटरनेट और वेबसाइट अवधारणा ने संचार व्यवस्था को इतना चुस्त-दुरुस्त बना दिया है कि अत्यंत अल्प समय में ही विश्व भर की असीमित जानकारियाँ माउस के उपर रखे जाने वाले तर्जनी में सिमट आया है। पलक झपकते ही असीमित आँकड़े कम्प्यूटर स्क्रीन में उपलब्ध हो जाता है।

कम्प्यूटर संजाल प्रणाली एक ओर जहाँ अत्यंत त्विरित व मानवीय संवेदनाओं से परे कार्य करने में सक्षम है वहीं इसकी कुछ अवगुण भी सामने आये हैं, जैसे कि किसी भी कारण से प्राप्त त्रुटिपूर्ण प्रेक्षण आंकड़ों को छोड़ देने की अक्षमता, राडार व उपग्रहों से प्राप्त अनुमानित चित्रों से बादलों की स्थिति, वायु दिषा व गित, जलवाष्प की मात्रा, वायु प्रवाह, विभिन्न स्तरों पर तापमान आदि सम्बन्धी अनुमानित आंकड़े प्राप्त कर पूर्वानुमान तैयार किया जाना अर्थात् अनुमानित आंकड़ों से ही अनुमान लगाना, कम्प्यूटर प्रचालन में मानविक गलितयों के कारण विपरीत परिणाम निकलना। कई बार तो एक जैसी स्थिति होने के बावजूद भी उचित सिनाप्टिक प्रणाली के अभाव में हर बार एक जैसा पूर्वानुमान नहीं होते किन्तु कम्प्यूटर संजाल में इस अवधारणा को शामिल नहीं किया जा सकता है। इन सब उदाहरणों से कम्प्यूटर संजाल द्वारा पूर्वानुमान त्रुटिपूर्ण कार्य सा लगता है। इससे इन पूर्वानुमानों की विश्वसनीयता कम हो जाती है और अंततः यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि मानविक प्रक्रिया द्वारा लिये गये प्रेक्षण आंकड़ों पर आधारित व मानविक पूर्वानुमान ही अधिक सटीक, विश्वसनीय व तर्कसंगत होता है।

हम जानते हैं कि मौसम आकड़ों के एकत्रीकरण और उसके आधार पर पुर्वानुमान की सहायता से प्राकृतिक आपदाओं को रोकना या प्रचंड़ता में शिथिलीकरण संभव नहीं है, किन्तु त्वरित, अधिकाधिक व सटीक मौसम पूर्वानुमानें के द्वारा विभीषिकाओं से संभावित हानियों को न्यूनतम किये जाने का प्रयत्न किया जा सकता हैं तथा प्रभाव.-संभावित जनता को यथासमय विभीषिका की प्रचंड़ता और बचाव के संगत उपायों की सूचना देकर उन्हें सतर्क किया जा सकता है। वैसे भी हमारा देश विज्ञान व तकनीकी के क्षेत्र में उन्नत देशों के साथ कंधे से कंधा मिला रहा है ऐसे में कम्प्यूटर संज्ञाल के अधिकाधिक प्रयोग से पूर्वानुमान में आधुनिकीकरण आज की परम आवश्यकता है। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं, कि कम्प्यूटर संज्ञाल आधुनिक मौसम पूर्वानुमान का वह सशक्त सोपान है जिसमें हमारे भविष्य की मौसमी सुरक्षा निहित है।

"मैंने अपने जीवन में उस इंसान से कभी कुछ नहीं सिखा जो मुझसे सहमत था"

- डुड्ले फिल्ड मेलोन

"वह नास्तिक है, जो अपने आप में विश्वास नहीं रखता।"

-स्वामी विवेकानंद

"भाग्य उनका साथ देता है जो हर संकट का सामना करके भी अपने लक्ष्य के प्रति दृढ रहते है ।"

- चाणक्य

कलाकार

- एम.आर.कान्होलकर, वै.स. प्रा.मौ.के,नागपुर

द्र-बदर भटक कर गली कूचे में ढूँढा । ढूँढा दरिया-पहाडों में, बिहड वनों में दूँढा मैंने ईश्वर । थक हार अंत में लाया इक पत्थर, समझ के ईश्वर । देखों कैसा मैं कलाकार,ख्द ही बन बैठा रचनाकार ।। छोडकर देह भाव दिये हथौडी के घाव एक एक । देकर यातना पत्थर को, बने मुरत किये प्रयास अनेक । अंत में देकर ईश्वर का आकार, मैं बन गया सबल । देखो कैसा मैं कलाकार मान बैठा ख्द को मानव सफल । आंगन में कर के गोबर पुताई, रंगोली सुंदर निकालकर । थंड, तपती धूप घोर वर्षा में मुरत को रख घर के बाहर । मैं, मूर्खे, अहम, स्वार्थ, अहंकार की चादर ओढ़ कर। देखो कैसा मैं कलाकार ऐश कर रहा घर के अंदर ।। विवेक खातिर लाई ईटा-माटी ,मंदिर बनाया स्ंदर स्थापना की उस मुरत की नाम रखा शिवशंकर । अधर्म, पाप छिपाने के लिए, मानवता का स्वांग रचाकर देखों कैसा मैं कलाकार, क्कर्म करता रहा भयंकर । किया तर्पण, गंगाजल, लेकर हाथों में ताम कलश । किया मुरत को पंचामृत स्नान, किया अर्पण बिल्व गंध प्ष्प पलश । देख जब भक्तों की भीड़ भारी, रखा नाम सिमरन अखंड जारी । देखो कैसा मैं कलाकार बन गया ढ़ोंगी पाखंड पुजारी ।। दर्शन मुरत का लेने, लगवाई सबों ने कतार । होड लगी दर्शन पाने, कोई दे सौ, कोई हजार । वो दीन-गरीब बेचारा दर्शन पाने हुआ लाचार । देखों कैसा मैं कलाकार, ईश्वर का भी किया व्यापार । मंदिर, अब मंदिर न रहा बन गया है टकसाल । इंसानियत का ढ़ोंग दिखाकर, अध्यात्म की खोली द्कान । आत्मज्ञान का ढ़ोल पीटकर, ख्द रहा अज्ञान । देखों कैसा मैं कलाकार, लोगों को सिखाए ब्राम्हज्ञान ।। मोह माया में फंसकर, रहा विषय वासना में लिप्त कभी कोशिश न की, रहुँ दुर इनसे अलिप्त । कैसे गलत करता रहा मैं हमेशा से काम । देखो कैसा मैं कलाकार, भूल गया खुद का आत्माराम,भूल गया खुद का आत्माराम।

मेक इन इंड़िया (भारत में निर्मित) कार्यक्रम में भारत मौसम विज्ञान विभाग की भूमिका

- ए.वी.गोडे,स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागपुर

देश आजाद होकर लगभग सत्तर साल होते आ रहे है । इन सत्तर सालों में इस देश के लभभग एक दर्जन नेताओं ने देश का नेतृत्व किया किसी ने लंबे समय के लिए तो किसी ने अल्प अविध के लिए । जिन प्रमुख प्रधानमंत्रीयों ने देश के विकास के लिए कार्य और उन्हें लागू करने के लिए कार्यक्रमों के साथ नारों का उपयोग किया वे हैं ।

- 1) श्री जवाहर लाल नेहरु-भारी उद्योग सिंचाई, विज्ञान और प्रोद्योगिकि
- 2) श्री लाल बहाद्र शास्त्री जय जवान ,जय किसान ।
- श्रीमती इंदिरा गांधी हरित क्रांति, गरीबी उन्मुलन और बैंको का राष्ट्रीयकरण।
- 4) श्री राजीव गांधी सूचना प्रौद्योगिकि, डिजिटल इंड़िया , संचार नेटवर्क, इंटरनेट. कम्प्यूटरीकरण।
- 5) श्री अटल बिहारी वाजपई-राष्ट्रीय महा-मार्ग फोर लेन ,ग्रामीण सड़क योजना ।

अभी वर्तमान प्रधानमंत्री ,श्री नरेंद्र मोदी जी ने मेक इन इंडिया (भारत में निर्मित) कार्यक्रम का शुभारंभ दिनांक 25, सितंबर,2014 को किया आजादी के बाद देश ने कई क्षेत्रों में विकास किया जैसे परमाणु परीक्षण , चिकित्सा विज्ञान, जैव चिकित्सा विज्ञान, बायोटेक इंजीनियरिंग, समुद्र विज्ञान ,सूचना प्रौद्योगिकी,मंगल उपग्रह मिशन और भारी उद्योग,बड़े सिंचाई प्रकल्प इत्यादि उपग्रह उड्डयन में इतनी महारत हासिल कि है की अन्य देशों के भी उपग्रह हम छोड़ते हैं । इन सभी सफलताओं में हमारे वैज्ञानिकों का और अभियंताओं का अमूल्य योगदान हैं । लेकिन जिन उपकरणों का और कलपुर्जों का इनमें उपयोग किया जाता है उनमें से ज्यादातर आयातीत होते हैं । हम इन चीजों के लिए विदेशों पर निर्भर रहते हैं । उदाहरण के तौर पर क्रायोजेनिक इंजिन हम रुस से आयात करते थे जिसका उपयोग उपग्रह छोड़नेवाले रॉकेट में किया जाता है । अगर यह क्रायोजेनिक इंजिन हमें मिलने में देरी होती है तो हमारी योजना विफल हो जाती है ।

मेक इन इंड़िया के अंर्तगत देशी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों को हमारे देश में ही सभी आवश्यक वस्तुयें बनाने के लिए प्रेरित करना यह इसका मुख्य उदे्श्य है। जिसके कारण हम कई मामलों में आत्मनिर्भर हो जाएगें,और हमारे पढ़े-लिखे युवाओं को रोजगार मिलेगा और अपनी क्षमता और प्रतिभा दिखाने का मौका मिलेगा साथ में आयात घटकर, निर्यात भी बढ़ सकता है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग देश का सबसे प्राना वैज्ञानिक विभाग है इसमें डॉ.विक्रम-

-सारभाई जैसे जाने-माने वैज्ञानिकों ने अपनी सेवायें दी है। भारत मौसम विज्ञान विभाग में, पुना और दिल्ली में अपना वर्क शॉप है,जो मौसम के पुर्वानूमान करनें में लगने वाले प्राचलों, जैसे नापने वाले उपकरणों को बनाता और जाँचता है। जो देश में स्थापित सभी मौसम वेधशालाओं में उपयोग में लाए जाते है। अगर इन वर्क-शॉपों का आधुनिकरण करके देश में ही उन्नत किस्म के उपकरण बनायें जा सकते जो मौसम के पुर्वानूमान करने में मददगार होगें। भारत मौसम विज्ञान विभाग के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह रही है की मौसम पुर्वानूमान करने के लिए उसे अपना खुद का तंत्र-ज्ञान और विज्ञान विकसित करना पड़ा क्योंकि यह अन्य देशों से आयात नहीं किया जा सकता। यह तंत्र-ज्ञान और विज्ञान उनके पास नहीं था। आज भारत मौसम विज्ञान विभाग कई प्रकर के पुर्वानूमान जारी करता है जैसे दीर्घ कालिक पूर्वानुमान, मध्यम कालिक पूर्वानुमान,तात्कालिक पूर्वानुमान। दीर्घकालिक पूर्वानुमान, जो देश की अर्थव्यवस्था और उद्योगों के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस दीर्घकालिक पूर्वानुमान के बदौलत अर्थशास्त्री, उद्योगपित ,व्यापारी और किसान अपनी योजनाएँ बनाते है। मानसून कि सिक्रयता का अध्ययन करके, शासन अपनी योजनाओं को निर्धारित करता है। तािक आनेवाले सुखा या आकाल से देश में आनेवाले संकट से बचा जा सके। तािक पूर्व तैयािरयां करके इसका हल ढूँढें।

आज हमें मौसम पूर्वानुमान करने के लिए कई प्रकार के पर्यवेक्षण, मौसमी प्राचलों कि आवश्यकता होती है जैसे तापमन, नमी,दबाव ऊपरी हवा की गित और दिशा, बादल गित, बादल राशि, बादल विकास, बादल के प्रकार की जरुरत होती है । सटीक मौसम पूर्वानुमान करने के लिए रेडार उपग्रह (भूस्थिर और ध्रुवीय),उच्च गित कंप्यूटर प्रणाली, उन्नत किस्म के संचार साधन जिन की मदद से मानसून के सिनोपिटक संस्था(Synoptic system) जैसे मानसून द्रोणी का, पश्चिमी द्रोणी का,जेट स्ट्रीम, कम दबाव, अवदाब,चक्रवात का आकलन किया जा सके । जिसके लिए मौसमी आँकडे उपरोक्त उपकरणों द्वारा प्राप्त किये जाते है । मौसम पूर्वानुमान के सत्यापन के लिए हमें एक कारगर स्वचालित मौसम स्टेशन और स्वचालित वर्षामापी स्टेशनों के नेटवर्क की जरुरत है । इन्हीं मौसमी आंकडे के आधार पर बड़े-बड़े प्रक्लपों(catchment area for dam) का बनावट एवं रचना तय होती है । मौसम,जलवायु आँकडो और मौसम पूर्वानुमान के बिना कोई भी उधोग,परियोजना सफल नहीं हो सकती । यह कहना गलत नहीं अगर भारत मौसम विज्ञान विभाग को मेक इन इंड़िया(भारत में निर्मित) कार्यक्रम से हटा दिया जाय तो यह कार्यक्रम आधा-अध्रा रह जाएगा ।

किसी भी देश के लिए उसकी जनता सर्वोपरि होती है । और उसके जान -माल और स्वाथ कि सुरक्षा सरकार का सर्वप्रथम दायत्व होता है ।

बदले हुए जलवायु परिपेक्ष्य में स्वाथ्य सबंधी बहुत समस्याएँ उभरकर आ रही है। जिसके लिए भारत मौसम विज्ञान विभाग ने कई राज्यों के साथ विज्ञापन समझौता किया है। भयंकर गर्मी से बचने के लिए महाराष्ट्र, गुजरात और ओडिशा में ही<u>ट एक्शन योजना 2016</u> की शुरुवात की जा रही है जिसमें मौसम विज्ञान विभाग कि अहम भूमिका है। बढ़ती हुई आबादी के लिए जल, खाद्दान्न - -भंडारन और बिजली अहम है। बिजली की लागत ,खपत और उत्पादन यह दैनंदीन मौसमी आंकडो पर निर्भर करता है. आए. एम डी और पोसोकों के बीच एक विज्ञापन समझौता किया गया है । जिसमें पोसोकों के विद्युत केंद्रों को समय - समय पर मौसमी आँकडे उसके जरुरत के अनुसार दिए जाएगें । जिससे बिजली उत्पादन कि लागत, बचत और मौसम परिघटनाओं से होनेवाले नुकसान से बचा जा सके । आज रोजगार के क्षेत्रों में पर्यटन, रेल,जल, समुद्र और हवाई मार्ग से यातायात बहुंत बढ़ गई है जिसमें युवाओं के लिए रोजगार की अपार संभावना है । इसके सुचारु रूप से संचालन के लिए, भारत मौसम विज्ञान विभाग विमानन, राष्ट्रीय महामार्ग और पर्यटन के लिए तात्कालिक, दैनदिन, मध्यम और दीर्घ कालिक मौसम पूर्वानुमान जारी करता है मौसम विज्ञान के आवेदन एवं उपयोगीता वाले क्षेत्र जैसे कृषि, विमानन, क्रिडा या खेल ,पर्यटन, आरोग्य ,सिंचाई ,अंतरिक्ष ,जल भंडारन, पेयजल सुरक्षा, भूजल सुरक्षा, पनबिजली, वायु ऊर्जा ,सौर ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा दूध डेअरी, आरोग्य, राजमार्ग, खाद्य सुरक्षा ,जल सुरक्षा, नैसीगिक मौसमी आपदाएं जैसे है । मौसमी सेवायें जैसे जलवायु, रक्षा आपदा प्रबंधन ,गर्म दिन, ताप कि लहर,तीव्र ताप कि लहर, सर्द दिन ,शीत लहर, तीव्र शीत लहर, हीमपात ,तूफान,ओला, आंधी गड़गड़ाहट वाला, चक्रवात इत्यादि ।

उपरोक्त क्षेत्रों में हमें सेवाएं देने के लिए बहुत उन्नत किस्म के उपकरणों कि जरुरत होती है और उनका समय पर उपलब्ध होना जरुरी है ताकि सेवा निरंतर चलती रहे । अगर ये उपकरण विदेशों से आयातित हो तो वे काफी महंगे होगें, अगर इनका निर्माण देश में ही हो जैसे हमारे लोकप्रिय प्रधान मंत्री चाहते है ।

देश कई प्राकृतिक आपदाओं का हमेशा सामना करता है बहुत सारे प्राकृतिक आपदायें मौसम संबंधी होती है इससे निपटने के लिए हम आज उन्नत प्रौद्योगिकी उपयोग कर रहे है जैसे उपग्रह,रेडार इत्यादी । देश में लगभग रेडार का एक जाल बिछाना चाहते है तािक विमानन, कृषि, क्रिडा या खेल ,पर्यटन, रेल और राष्ट्रीय महामार्ग के मौसम पूर्वानुमान में शत- प्रतिशत निपुणता हो ।

तात्कालिक पूर्वानुमान जारी करके देशवासियों, किसानों को गड्गड़ाहटवाला तूफान, ओला, आंधी से उनके जान-माल कि रक्षा की जा सके । ये सब तभी संभव होगा जब लोकप्रिय प्रधानमंत्री द्वारा दिया गया मेक इन इंडिया (भारत में निर्मित) कार्यक्रम को हम सब सफल करने का संकल्प लें । अगर हम पिछले 4500 हजार साल के तापमान के आंकड़े देखे तो हमें लगभग 75 स्विंगस (उतार -चढ़ाव) पृथ्वी के धरातल पर नजर आएंगें । मतलब पृथ्वी कभी गरम तो कभी ठंडे दौर से गुजरी है । याने पृथ्वी का कभी गरम तो कभी ठंडे दौर यह एक प्राकृतिक प्रक्रिया है । अभी फिलहाल गरम दौर की और बढ़ रहे है । लेकिन आज हम भूमंडलीय उष्णन की चपेट में है । चिंता का कारण काफी कम समय में औसत तापमान में लगभग एक डीग्री सेलसियस का बढ़ना है जो गहन चिंता विषय है । भूमंडलीय उष्णन के परिणाम अभी दिखने लगे है जैसे मुंबई और चैन्नई में हुई कम समय में अतिवृष्टी । कहीं सूखा तो कहीं भारी वर्षा, जिन इलाकों में पहले भारी वर्षा होती थी वहाँ सुखा और राजस्थान में इसके विपरित कहीं बर्फबारी और तो कहीं आंधी, और ठंड़-

-यह चिंता जताई गई है की आनेवाले समय में जो समुद्र किनारे में बसे महानगर है वे, बढ़ते भूमंडलीय उष्णन के कारण समुद्र के बढ़ते जल स्तर के कारण जलमग्न हो जायेंगे । इसका कारण ,मानवी जरुरतों को पूरा कराने के लिए बढ़ता औद्योगिकरण, बिजली उत्पादन में प्राकृतिक संसाधनों का अपार दोहन और जंगल कटाई के कारण हमारे ग्लेशियर सिकुड़ते जा रहे है। मानव से विनती है कि सृष्टी ने बनाया है धरा की रचना स्वर्गमयी संजोया उसने है सभी को बन खुद ममतामयी, कुछ तो रहम कर हे मानव, चेत जा, मत बरबाद कर हिमानी, खुद की जीवन संजिवनी ।

रेतिला तूफान कई शहरों को लंबे समय तक धूल भरी आंधी के चपेट में रख सकते है । इसका मतलब आनेवाले समय में बहुत सी मौसमी प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान कराना पड़ेगा । जिसके लिए हमें उन्नत किस्म के उपकरणों की जरुरत पड़ेगी और नई प्रौद्योगिकि का भी विकास करना पड़ेगा. इन सब का हल मेक इन इंडिया(भारत में निर्मित) कार्यक्रम में ही है । अगर इन प्राकृयिक आपदाओं का सामना हमें कराना है तो इस कार्यक्रम को सफल बनाने का दायित्व हरेक भारतीय का होगा । इसके पूर्व तैयारी में भारत मौसम विज्ञान ने आधुनिकरण का दौर चल रहा है । जो इन पंक्तियों में दर्शाया गया है ।

स्थानिय, प्रादेशिक और मानसून पूर्वानुमान, सिंटक भविष्यवाणी करना आज है आसान । जब से सांख्यिकी मॉडल हुये आधुनिक और गतिमान, जलवायु, मौसम पूर्वानुमान जानना और भी हुआ आसान । आय वी आर एस और भूमंड़लीय संजाल, ये है अब सदा ही मेरे लिये विद्यमान् ।

* * * * * * * * *

"जब तक आपका सामना आपकी सबसे बड़ी कमजोरी से नही हो जाता तब तक आपको अपनी सबसे बड़ी ताकत के बारे में पता नही चलता."

– सुसान गेल

बेचारे ने सोचा था

-डॉ. रविंद्र आकरे, स.मौ.वि.-।।,प्रा.मौ.के,नागपुर

जब हुई पढ़ाई लिखाई पूरी, फिर मिली, नौकरी, छोकरी ।। माना, सब हासिल की, जो बेचारे ने सोचा था ।। अब ख्वाब पूरे हुए, और नई जिंदगी हुई शुरू ।।

सोचा था, पे कमिशन आएगा,

तन खानेवाली, तनख्वाह, आई, खान-पान और शानौ-शौकत में लगी ।। दो दिन में पूरा जेब खाली कर गई, बेचारे ने सोचा था, बैंक बैलेन्स बढ़ाऊँगा । आधार, भविष्य का बनाऊँगा ।।

अच्छे दिन लाएगा ।।

पर मिली खाली टोकरी,

किसे पता था, ऐसा चूना लगायेगा ।।

बेचारे ने सोचा था, कि तंगी छूटेगी ,

और ऐशो आराम आएगा ।।

देखा ना मास्टर की पिटाई,

दफ्तर में, साहब की खिंचाई ।।

क्या जीवन बनाम केवल रूलाई

बेचारे ने सोचा था

बहुत हो गई घिसाई,

कब होगी, इससे जुदाई

सामाजिक सेवाएँ दी, दफ्तर के हर, आदेश को माना, ।। ना कभी की अनदेखी बेचारे ने सोचा था किया फर्ज, अपना पूरा, तारीफ सुनने का, सपना रहा अधूरा ।। लड़की की शादी कराई
मिली, बच्चे को भी नौकरी ।।
वक्त ने ऐसा संयोग बनाया,
कि मकान ही नहीं बन पाया ।।
बेचारे ने सोचा था, अब मिलेगी मुक्ति,
लेकिन नहीं मिली सुख शांती।।

सहा हूँ, बीवी की रूसवाई, बच्चे की रूलाई ।। और, मेरे मन के सम्मान की लुटाई, बेचारे ने सोचा था, साइकिल छोडूँगा और बाईक चलाऊँगा ।।

माता-पिता की दुहाई
भाई-बहन की रूसवाई ।।
दोस्तों की मौज-मस्ती
लगती है कभी दिल्लगी।।
बेचारे ने सोचा था,
क्या, यह है नसीब की चाल,
या है, जीवन का खेल ।।

दफ्तर से मिला सिमरन पत्र, कभी मिला ट्रान्सफर, तो भागो, अब आदेश पर । बेचारे ने सोचा था कि अब नौकरी छोड़ो या धंधा पकड़ो॥

अंत में आई सेवानिवृत्ति दफ्तर से मिली, हमेशा की छुट्टी अब तबियत भी रहेगी ना साज बेचारे के दिल की है आवाज,टेन्शन जाएगा और पेन्शन आएगा, और दिल यूँ ही गाएगा ऐ दिल अब कहीं न जा, ना किसी का मैं, ना कोई मेरा ।।

राष्ट्रभाषा हिंदी : दीपक तले अंधेरा कब तक

- आर.डी.मेश्राम, स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागपुर

''हिंदी में देश की राष्ट्रभाषा होने की सारी काबिलियत है ।''- भगत सिंह ''देश की राष्ट्रभाषा हिंदी ही हो सकती है ।'' - महात्मा गांधी

उपरोक्त विचार भारत के उन महापुरूषों की है, जिन्होंने अंग्रेजी शासन के क्रुर शिकंजे से देश को आजादी दिलाने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया । वे चाहते थे, अंग्रेजों की गुलामी से मुक्ति के बाद देश को अंग्रेजियत भाषा से भी मुक्ति मिले, तथा केवल हिंदी देश की राष्ट्रभाषा बने । क्या स्वतंत्रता के पश्चात हिंदी को सही मायने में राष्ट्रभाषा का सम्मान प्राप्त हो सका ? क्या आज हिंदी भाषा देश के सभी राज्यों में जन व्यवहार की प्रथम भाषा है ? क्या देश में हिंदी भाषा के प्रयोगकर्ता यथोचित सम्मान की दिष्ट से देखे जाते ? क्या हमारा देश अंग्रेजी भाषा के दब दबे से मुक्ति पा सका है ? देश की स्वतंत्रता को 70 वर्ष पूर्ण होने को है । इतने वर्षों के बाद भी आज राष्ट्रभाषा हिंदी की जो दयनीय स्थिति है, उस पर विचार करना जरूरी है ।

सर्वप्रथम हम अपनी संसदीय प्रणाली पर नजर डाले और देखें कि हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु यहाँ कितना प्रयास किया जाता है। संसद को पैंसठ से अधिक वर्ष हो गए है, लेकिन आज तक एक भी कानून भारत की राजभाषा में पारित नहीं हुआ। यहाँ तक की कोई भी कानून हिंदी में लिखा नहीं गया। सभी कानून अंग्रेजी भाषा में लिखे गए तथा उनका अनुवाद हिंदी में खानापूर्ति हेतु किया गया। हमारे नौकरशाह न हिंदी में लिख सकते है, न पढ़ सकते है, और न बोल सकते है ।इस प्रकार हम अपनी संसदीय प्रणाली में हिंदी की उपेक्षा और अपमान करने में लगे हैं।

एक समय हिंदी साहित्य के प्रचार एवं प्रसार की जिम्मेदारी जिन प्रकाशक वर्ग पर हुआ करती थी, आज यह वर्ग हिंदी साहित्य की दूर्दशा करने में तुला है । आज का भारतीय प्रकाशक वर्ग विदेशी साहित्यों के आगे नतमस्तक हो चुका है । विदेशी भाषा का साहित्य जो थोड़ी बहुत ख्याति अर्जित कर लेता है, हमारा प्रकाशक वर्ग तुरंत उसका हिंदी रूपांतरण कर प्रकाशित करता है । और यह उसके आमदनी का अच्छा साधन बनता जा रहा है । हमारा प्रकाशक वर्ग अब इतना व्यावसायिक हो गया है कि हमारे मूल हिंदी भाषी साहित्य के प्रकाशन में उसे अब रूचि नहीं रहीं । वह केवल वही साहित्य प्रकाशित करने में लगा है जो बिकता है तथा जिससे उसे ज्यादा से ज्यादा फायदा मिले।प्रेमचंद, शरदचंद्र, महादेवी वर्मा, निराला जैसे हिंदी के प्रखर साहित्यकार आज हाशिए पर आ गए है ।

आज हमारा हिंदी साहित्यिक संसार विदेशी साहित्यकारों के बढ़ते प्रभाव के कारण लाचार और बेबस सा हो गया है । हिंदी भाषा का विनाश करने में हमारी शिक्षण संस्थाएँ एवं देश में बढ़ते विदेशी कंपनियों के प्रभुत्व का प्रभाव भी काफी महत्वपूर्ण योगदान है । आज हर शहर और गाँवों में अंग्रेजी भाषा में ज्ञान बाँटने वाले अनेक छोटे-बड़े पाठशालाएँ खुल गए हैं जिन्हें आप और हम कान्वेंट स्कूल के नाम से जानते है ।यह शिक्षा के केन्द्र अंग्रेजियत की मानसिकता उनके पैदा होते ही डाल देते हैं । अंग्रेजी में कविता , अंग्रेजी में जानवरों के नाम, अंग्रेजी में फल एवं फूलों के नाम, यहाँ तक की भारतीय माता पिता एवं भाई बहनों जैसे रिशतों संबंधों का अंग्रेजीकरण किया जा रहा है।

अंग्रेजी भाषा में ज्ञान बाँटनेवाले इन पाठशालाओं की संख्या दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है जबिक हिंदी माध्यमों की पाठशालाएँ जर्जर एवं जीर्ण-शीर्ण हो रही है । जब आप और हम बच्चों को पैदा होते ही अंगेजी चाल-ढ़ाल व अंग्रेजी भाषा की दासता में खुशी-खुशी जकड़ने लगे है तो देश की उन्मुक्त हिंदी भाषा का आस्वाद कैसे ले पाएंगे । देश में बढ़ते अंग्रेजी पाठशालाओं के कारण अंग्रेजी घर-घर में ठाठ से पल रही है वही हमारी हिंदी घर की मुर्गी दाल बराबर रह गई है । देश में बढ़ती देशी-विदेशी कंपनियाँ इस बात के लिए गौरान्वित महसूस करती है कि उन्होंने भारत की औद्योगिक विकास को तेजी से बढ़ाया है और मजबूत आर्थिक स्थिति प्रदान की है । लेकिन यदि राट्रभाषा के विकास की बात करें तो इनका योगदान नगण्य है । आज जितने भी रोजगार के विज्ञापन बड़ी-बड़ी कंपनियों अथवा शिक्षण संस्थाओं द्वारा दी जाती है उनमें इस बात का स्पष्ट उल्लेख होता है । 'अंग्रेजी' लिखना, पढ़ना अनिवार्य है अथवा अंग्रेजी भाषा का ज्ञान आवश्यक है । अर्थात जिस देश में बेरोजगारों की लंबी कतार लगी हो और रोजगार पाने का रास्ता केवल अंग्रेजी भाषा का ज्ञान हो, ऐसे में,हिंदी भाषा की राह में चलना कौन पसंद करेगा । सरकारी गैर सरकारी सभी कार्यालयों में छोटे से छोटे पदों की भर्ती हेतु अंग्रेजी भाषा के ज्ञान को विशेष महत्व दिया जाता है । ऐसे में हिंदी के विकास को गित कैसे मिलेगी ।

हमारे देश में हो रहे आधुनिक बदलाव ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को खोखला कर दिया है । इसने माता-पिता व भाई-बहनों के रिश्तों को डैड और मॉम की संस्कृति में बदल दिया है । इसने हमें संवादों के रूप में केवल दो शब्द दिए है, हे, हैलो तथा यस, नो, आज हम अपने भावनात्मक रिशतों को अंग्रेजियत के तेजाब में धीरे-धीरे घोल रहें है । आजकल के दादा-दादी या नाना-नानी अपने पोता-पोती को कहानियाँ नहीं सुनाती, माताएं लोरियाँ नहीं गाती बल्कि बच्चे पाठशाला में आकर उन्हें पोयम और स्टोरी सुनाते है । यह देश का दुर्भाग्य ही है कि उसकी राष्ट्रभाषा की ज्योत प्रखर होने के एवज मंद एवं शिथिल होती जा रही है । यदि हमें अपने देश की राष्ट्रभाषा को दयनीय स्थिति से उबारना हो तो हमें सभी भारतीयों के मस्तिष्क में यह बात डालनी होगी कि वह भारत का नागरिक है तथा इसकी राष्ट्रभाषा हिंदी है । हमें अपना परिचय "Indian" के रूप में नहीं बल्कि भारतीय के रूप में देना चाहिए । हमें अपने देश एवं अपनी राष्ट्रभाषा पर गर्व महसूस होना चाहिए वर्ना वह दिन दूर नहीं जब इतिहास में यह पढ़ा जाएगा कि भारत एक देश था जिसकी राष्ट्रभाषा हिंदी थी ।

एक दीपक मेरे द्वार पर भी जलने दो....

-ए.एम.भट्ट,स.मौ.वि-॥,मौ.का.अंबिकापुर

जिन लम्हों को मैं अकेला जीना चाहा, जमाने ने जीने न दिया। जब उनकी जरुरत है तो, मेरी परछाई के सहारे छोड़े जाते हैं। कसम खायी थी क़यामत तक साया बन साथ चलने की। इंतज़ार में उनकी रहबरी के , मेरी परछाई बुढ़ी हुई जाती है।

आज जश्ने आज़ादी है, लालिकले पर तिरंगा झुम-झुम उठेगा। ज़रा सर झुका लो चमन वालों, तिरंगे की झलक पाने दो। तेरी राजपथ से छिटक ये पगडंडी, मेरी झोपड़ी पर विराम पाती है। सूनी पड़ी पगडंडी, एक तिरंगा वहाँ भी फहरा दो, एक देशगीत गाने दो।

तुम क्यों कर भूले,रामलला का पवन रथ,लंका जीत यहीं से गुजरा था।
तब रंग था -गुलाल था, कारवाँ कमाल था,संग सारा वृध्द - युवा -बाल था।
अब बारुदी गुबार से ये कैसा अभिनन्दन ? सजाओ द्वार अपने राजमहलों के।
जगमग रहे महल और राजपथ तेरा, एक दीपक मेरे द्वार पर भी जलने दो।

मेरा शहर !!!

वाह रे मेरा शहर !!
शहर का गौरव-गौरव पथ,
सुबह टहलने निकला - बड़ी दुर्गन्ध थी।
रिंगरोड पर धूल का गुब्बार और
घड़ी चौक की बंद थी।
सड़कों के किनारे,
गाड़ियों का बेतरतीन ठहराव और,
दिन में रौशन बित्तयाँ,
सड़कें तंग और शाम को रोशनी मंद थी।
जिन गिलयों से गुजरा , कूड़ों का ढ़ेर,
लगा शायद स्वच्छ भारत का अभियान ,
लोगों को नापसंद है,
क्योंकि - वे नालियाँ भी खुली देखी
जो कल तक बंद थीं।

नेताजी का खोखला विकास जन-आंदोलन

- ए.वी.गोडे, स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागप्र

चुनाव के पहले था, अच्छे दिनों का आश्वासन बुरे दिनों के लिए था पिछली सरकार का कारण ना कोइ अनहोनी ना कोइ अच्छा आंदोलन बस समझ में आया भरोसा करना था एक पागलपन ना कभी था, ना है, ना रहेगा आम आदमी के लिए कोई अच्छा अभियान राजनीति के बड़े पेचिदे दृष्टीकोण हर बात के लिए होते है अलग- अलग कारण मेरे प्यारे नेताओं अच्छे दिनों का क्यां कभी आयेगा सावन पता नहीं कब नेताजी खो जाए अपना अभियान

और बीच राह में दम तोड़ेगा आम आदमी विकास आंदोलन नेताजी बड़े चतुराई से बताते उन्हें चुनने का कारण आम आदमी सहजता से न्योछावर करता नेताजी पर ईमान लेकिन नेताजी के कारनामों से तिल -मिला उठता ईमान जब नहीं मिलता विकास और भोजन

नारों से तो गद-गद

नेता का आंगन और अपने झूठे वादों से नेता होता है रोशन काला बाजारियों से भ्रष्टाचारियों से.

आतंकियों से और माफियों से नेताजी का गहरा अट्ट बन्धन तो कैसे होगा सफल आम आदमी विकास आंदोलन हे भारत माते तुझे शत-शत नमन क्यां कभी होगा इस वतन से

एसे नेताओं का पतन

और कभी किसी युग लोह पुरष का होगा आगमन क्या इसी आस में जलता रहेगा मेरा वतन,मेरा वतन और फिर कभी नहीं होगा नसीब राम राज्य का आगमन हे मेरे बिगड़े चमन हे मेरे बिगड़े चमन ।

ख्बस्रती

- डी.एस.गायकवाड, स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागपुर

खुबस्रती चाहे मन की तन की, चाहे प्रकृति की, होती है गुलशन की तरह । खूबसूरती नन्हे-मुन्नों के निरागसता की, उनके मुस्कुराहट की, होती है खिलती कलियों की तरह । खुबस्रती नारी के खजालता की (लज्जा-शालिनता) उसके'ग्लबदन' (सौंदर्य-रूप) की, होती है, उगते खुर्शिद (सूर्य) के लालिमा की तरह । 'खुबस्रती' युवाओं के प्रतिभा की उनके जिगर (धैर्य) की, उनके 'गीर मुद्रा' (विजयी मुद्रा) की, होती है- हिमालय के उँचाई की तरह । 'खूबस्रती'- प्रौढों-वृदों के 'जाबिता' की -होती है- 'जलते दिप के नूर की तरह 'खुबस्रती'- वीरों के बलिदान की, - उनके 'शहादत' की, - होती है- 'मातृभूमि के इबादत (भक्ति) की तरह । ख्बस्रती - ग्रूदेव की चेतना की - उनके 'उपदेशों' की,

- होती है इरफान (ज्ञान) की तेजस्विता की तरह । 'खूबसूरती' - जुल्मों के एतराज (विरोध) की - उनके संघर्ष की,

- होती है- 'आफताब' (सूरज) के 'आतिश' (आग) की तरह । 'खूबसूरती' का 'आलम' (संसार) - इस कदर 'आबाद'(समृध्द) है - जैसे गहरे सागर में सीप मोतियों की तरह

- जैसे नीले गगन में बिखरे- चमचमाते तारों की तरह-

- खूबसूरती- खूबसूरती ------

बढ़ती विलासिता - घटती आशा

-ए.एम.भट्ट,स.मौ.वि-॥,मौ.का.अंबिकापुर

कहा जाता है कि आवश्यकता आविष्कार को जन्म देती है। मानवी आवश्यकता यदि पूर्णता को प्राप्त कर ले तो उसका जीवन स्थिरता की ओर अग्रसर हो जाएगा। तब न आवश्यकता रहेगी और न कोई नवीन आविष्कार । पर ऐसा न हुआ है, न होगा। पाषाण काल से वर्तमान काल तक अनगिनत आविष्कार , खोज एवं निर्माण ने मानव जीवन को निरन्तर विकसित किया है। शारीरिक विकास के साथ बाँद्विक क्षमता एवं दक्षता नित-नवीन कल्पना को जन्म देती जा रही है और उसकी प्रतिपूर्ति उसे नवीन आविष्कार के लिये मजबूर करती जा रही है। लेकिन इसका एक दूसरा पहलू भी है - जब चित्रकार अपनी कल्पना में रंग भरना प्रारम्भ करता है तो तो वह कभी उस चित्र की प्रकृति एवं मर्यादा के विपरित रंगों का चयन कदापि नहीं करता अन्यथा उसकी कल्पना विकृत होकर बेजान हो जाती है। कुछ ऐसी ही विकृति हमारे भौगोलिक प्रकृति में परिलक्षित हो रही है। हमारी विलासिता का परिणाम है कि ऊँचे दरख्तों , झाडियों , खग-कलरव एवं वनराज की हूँकार की जगह कांक्रिट और इस्पात के ऊँचे-ऊँचे झाड़ ,िसमेंट और कोलतार की सड़कें उग आयीं है। कल-कारखानों और अनगिनत तेल पीकर ज़हर का गुबार उगलती वाहनों का शोर आसमान में अभेद्य किले बना रही है जिसे लगातार लोह अस्थि-पंजर वाला दानवाकार पक्षी अपनी गड़गड़ाहट से भेदने की कोशिश में हमारे सिर में विकृति उत्पन्न कर रहा है।

परिणाम ! परिणाम क्या होगा ?

हमारी बौद्धिक विकास का परिणाम तो हमारी विलासिता है इसमें किसी को विचार करने का निवेदन करना मेरी असिहष्णुता होगी। पर मेरा निवेदन है हम इनके दुष्परिणामों पर विचार करें। मैं अपने वर्तमान कार्यस्थल मौसम वेधशाला अम्बिकापुर में उपलब्ध वर्षा के आंकड़ो के माध्यम से आपको मानवीय विलासिता के राहों पर चल पड़े कदमों की छाप से उड़ते विषाक्त वायु के दुष्परिणामों पर विचार का कारण उपलब्ध कराने की कोशिश करता हूँ -

सन 1986 से 2015 तक मानसून चक्र में मौसम वेधशाला अम्बिकापुर में दर्ज की गयी कुल वर्षा के आंकड़े नीचे सारणी में प्रस्तुत है -वर्षा - मिलीमीटर में-

वर्ष	1986	1987	1988	1989	1990	1991	1992	1993	1994	1995
जून	428.6	58.6	249.6	262.4	360.3	130.8	133	296.6	835.3	126.4
जुलाई	420.6	438	383.1	593.5	609.4	652.3	280.7	439.6	693.4	395.2
अगस्त	393.1	251.9	397.9	287.2	271	642.4	546.3	248.3	290.2	484
सितंबर	91.9	435.9	171.1	115.3	265.5	235.2	189.7	373.5	232.7	146.1
कुल वर्षा	1334.2	1184.4	1201.7	1258.4	1506.2	1660.7	1149.7	1358	2051.6	1151.7

वर्ष	1996	1997	1998	1999	2000	2001	2002	2003	2004	2005
जून	363.7	400.9	109.4	279.5	223.5	516.6	191.5	146.6	108.7	270.7
जुलाई	241.2	416.5	353.2	384.6	249.6	836	151.7	268.5	347.7	258.8
अगस्त	464	493.9	383.5	365.8	257.6	317.8	471.1	367.7	328.7	209.9
सितंबर	210.4	244	241.6	214	469	144.7	271.7	457.8	109.9	210.3
कुल वर्षा	1279.3	1555.3	1087.7	1243.9	1199.7	1815.1	1086	1240.6	895	949.7

वर्ष	2006	2007	2008	2009	2010	2011	2012	2013	2014	2015
जून	106.2	182.2	387.2	64.6	114.8	315.9	197.7	91.2	109.9	114.4
जुलाई	411.5	303.3	435.9	279.7	250	262.1	353.8	452.1	250.4	494.4
अगस्त	436.4	213.2	341.1	183.9	103.2	374.6	465.1	279.1	477.5	256.5
सितंबर	136.5	348.5	193.6	75	181.7	492.9	165.2	57.1	181.7	132.6
कुल वर्षा	1090.6	1047.2	1357.8	603.2	649.7	1445.5	1181.8	879.5	1019.5	997.9

उपरोक्त वर्षा आंकडों के आधार पर यदि प्रत्येक 10 वर्षों के अंतराल पर औसत वर्षा की गणना पर निम्नालिखित परिणाम प्राप्त होते हैं -

सन 1986 से 1995 - 10 वर्ष - औसत वर्षा - 1385.7 मिमी

सन 1996 से 2005 - 10 वर्ष - औसत वर्षा - 1235.2 मिमी

सन 2006 से 2015 - 10 वर्ष - औसत वर्षा - 1027.3 मिमी

प्रति 10 वर्षों के अंतराल में औसत वर्षा अन्तर -

सन 1995 से 2005 - (1235.2 - 1385.7) = (-) 150.5 मिमी

: अन्तर - (150.5 ×100) ÷ 1385.7 = 10.86: ↓

सन 2005 से 2015 - (1027.3 - 1235.2) = (-) 207.9 मिमी

: अन्तर - (207.9 × 100) ÷ 1235.2 = 6.83: ↓

सन 1901 से 2000 के मध्य 100 वर्षों की अविध में अम्बिकापुर की औसत मानसूनी वर्षा - 1256.5 मिमी दर्ज की गयी है। यहाँ से तुलना करने पर सन 2015 की स्थिति में यह अन्तर 1256.5 - 1027.3 = 229.2 मिमी की गिरावट को दर्शाता है। जिस भूभाग में जल का कोई बड़ा स्त्रोत न हो, जहाँ वर्षा का जल ही एक मात्र जीवन संचालन के आधारों में प्रमुख हो वहाँ इसमें निरन्तर आ रही कमी को यदि मानव ने अपनी विलासिता के उद्योग के दुष्परिणाम के रूप में नहीं समझा तो भविष्य की भयावहता के जिम्मेदार वर्तमान को कभी माफ नहीं किया जायेगा।

साइड इफेक्ट्स - यूँ मुस्कुराना

- प्रकाश चिंचोले,स.मौ.वि-11,प्रा.मौ.के,नागपुर

राह चलती चकाचक गाडी से नजर जब अचानक टकराई म्स्क्राने की अदा में स्पीड ब्रेकर की तरह बाधा आई। खिड़की से घूरती निगाहें बदल दी चलती राहें मन विचलित हो काहें क्षण में ओझल हुई राहें । सोचती होगी वह खटारा स्कूटर पर ध्यान सारी दुनिया पर क्यों इतना मुस्कुरा रहा है। 'अरे पगले' कहते, यूं समझाया गालों पर खुद चांटा यूँ लगाया मंजिल कुछ और सही अपने लक्ष्य से तू भटक नहीं । गाड़ी चाहें प्रानी ही सही चलाते वक्त धीमी रफ्तार सही सोशल नेटवर्क पर हर पल सही भरी राहों में इसे भूलना ही सही । उन्हें क्या खबर, कमेंट राहों में याद आया मंद-मंद गालों में दोस्त यूँ मुस्कुराया ।

दोस्त, सुना था, 'छूने से प्यार बढ़ता है' इस स्मार्ट युग में टच स्क्रीन के जमाने में बढ़ती उंगलियों की रफ्तार में वह हर किसी को लाइक करने लगा है वक्त आ गया है, आगाह कर देते है उसे यु मुस्कुराने की आदत लग गयी हैं।

* * * * * * *

"प्रतिभावान व्यक्ति यदि नष्ट होता है, तो बहुधा अपने ही व्दारा नष्ट होता है."

– जानसन.

"प्रशंसा वह हथियार है, जिससे शत्रु भी मित्र बनाया जा सकता है."

<u> – दयानन्द सरस्वती</u>

"चरित्र को कभी आसानी से और शांति से विकसित नहीं किया जा सकता. बल्कि मुश्किलों का अनुभव और मुसीबतों को सहकर, साफ़ दृष्टी रखकर, उच्च विचार रखकर और सफलता प्राप्त करके ही इसे हासिल किया जा सकता है."

में भी बन्ँगा एक व्यंग्य कलाकार

- एम.टी.एस.शिवानंद,स.मौ.वि-।।,प्रा.मौ.के,नागपुर

हाँ मैं भी बनूँगा एक व्यंग्य कलाकार । व्यंग्य कविता, भाषा, भाषा शैली, पेश करने का तरीका और प्रकाशकों के प्रतिक्रिया का आचार । व्यंग्य कविता का भी होता है कोई आधार ।

मेल मिलाप,बात-चीत, भाव-अभाव, आचार-विचार, कोप-प्रकोप में बदलाव का खिंचाव । व्यंग्य कविता रोज मर्राह के जिंदगी, प्रकाशकों को याद आनेवाली घटनाएँ बॉलिवुड, क्राइम, और अच्छे टीआरपी वाले धारावाहिक,पर हो तो प्रकाशक होते है आकर्षित । नहीं तो कवि रह जाता है प्रेक्षकों के भाव और प्रतिक्रिया से वंचित । वैसे टी.वी, रेडियो, दैनिक वार्ता पत्र, मासिक, साप्ताहिक में हम देखते सुनते और पढ़ते है

चुनाव के समय हर राजनैतिक दल इनकी सेवा लेता है बार-बार । आप पार्टी में ऐसे कविताकार है तीन चार, लोकसभा राज्यसभा ने देखा है ऐसे कवि बारंबार । अटल बिहारी वाजपाई भी थे एक महान कविताकार ।

व्यंग्य कविता कई बार ।

में कविता करता हूँ हिंदी पखवाड़े में हर बार । मानता हूँ कोशिश करने वालों कि कभी हार नहीं होती । मैं भी बनूँगा एक व्यंग्य कविताकार । मैं भी बनूँगा एक व्यंग्य कविताकार । मैं भी बनूँगा एक व्यंग्य कलाकार

* * * * * *

"कड़ी महेनत करे और सब्र करे. आपको आपका फल जरूर मिलेगा."

आहिस्ता चल जिंदगी

- डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागपुर

आहिस्ता चल जिंदगी अभी कई कर्ज च्काना बाकी है । कुछ दर्द मिटाना बाकी है, कुछ फर्ज निभाना बाकी है। रफ्तार में तेरे चलने से कुछ रूठ गये कुछ छूट गये रूठों को मनाना बाकी है, माय्स को हँसाना बाकी है। कुछ हसरतें अभी अधूरी है, कुछ काम की और जरूरी है ख्वाईशें जो छूट गई इस दिल में उसको दफनाना बाकी है क्छ रिशते बनकर टूट गए, क्छ जुड़ते-जुड़ते छूट गये उन टूटे-छूटे रिशतों के जख्मों को मिटाना बाकी है । तू आगे चल मैं आता हूँ, क्या छोड़ तुझे जी पायेंगे इन सासों पर हक है जिनका उनको समझाना बाकी है आहिस्ता चल जिंदगी अभी कई कर्ज च्काना बाकी है सबसे पहला कर्ज तो मातृभूमि का है, राष्ट्रभाषा हिंदी का है तो आइए सभी प्रण करें, हिंदी में ही बोलें और लिखें अपने 'मन की बात' की सफाई हिंदी में ही पेश करें देश का फर्ज निभाना बाकी है, राष्ट्रभाषा हिंदी का कर्ज च्काना बाकी है।

* * * * * * * *

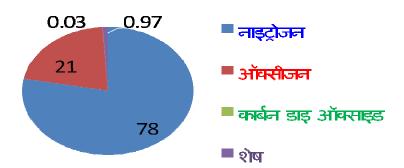
"यदि आप कोशिश करते हो और कुछ भी हासिल नहीं होता तो उसमे आपकी कोई लती नही है. लेकिन यदि आप जरा भी कोशिश नही करते और हार जाते है तो उसमे पूरी आप ही की गलती है."

वायु प्रदुषण के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव

- विवेक कुमार पाण्डेय एवं अनुपम काश्यपि मौसम केन्द्र,भोपाल

<u>वायु</u>

वायु विभिन्न गैसों का मिश्रण है। नाइट्रोजन 78 %, ऑक्सीजन 21 %, कार्बन डाइ ऑक्साइड 0.03% पाया जाता है तथा शेष 0.97 % में हाइड्रोजन, हीलियम, आर्गन, निऑन, क्रिप्टन, जेनान, ओज़ोन तथा जल वाष्प होती है।



वाय प्रद्षण की परिभाषा

वायु में कुछ तत्वों के अनावश्यक रूप से मिल जाने से वायु के भौतिक, रासायनिक या जैविक गुणों मे ऐसा कोई भी अवांछित परिवर्तन जिसके द्वारा स्वयं मनुष्य के जीवन या अन्य जीवों, जीवन परिस्थितियों तथा हमारी सांस्कृतिक सम्पति को हानि पहुँचे या हमारी प्राकृतिक सम्पदा नष्ट हो या उसे हानि पहुँचे वायु प्रदूषण कहलाता है।

- 🗲 वातावरण की ताजी हवा में हानिकारक और विषैले पदार्थों का बढ़ना वायु प्रदूषण का कारण है।
- बाहय तत्वों, विषाक्त गैसों और अन्य मानवीय क्रियायों के कारण उत्पन्न प्रदूषण ताज़ी हवा को प्रभावित करते है तथा मानव जीवन, पेड़ पौधों और पशुओं पर बुरा प्रभाव डालते है दरअसल वायु सभी मनुष्यों, जीवों व वनस्पतियों के लिए अत्यंत आवश्यक है।
- मनुष्य बिना भोजन पानी के कुछ दिन तक जीवित रह सकता है। पर बिना हवा के कुछ मिनट भी जीवित रहना नाम्मिकन है।





वाय प्रदूषण के स्त्रोत

- प्राकृतिक स्त्रोत
- मानवीय स्त्रोत
 - प्राकृतिक एवं मानवीय कारणों से वायु के दूषित होने की प्रक्रिया वायु प्रदूषण कहलाती है
- प्राकृतिक स्त्रोत :- प्रकृति में ऐसे कई स्त्रोत है जो वायु मंडल को दूषित करते है जैसे ज्वालामुखी विस्फोट , ज्वालामुखी (राख,कार्बनडाइऑक्साइड ,धुँआ,धूल और अन्य गैसें), तूफ़ान ,जंगलों की आग, कोहरा ,बंजर भूमि से उड़ने वाली धूल वायु इत्यादि वायुमण्डल को दूषित करते है ।
- मानवीय स्त्रोत :-बिजली संयन्त्रों की चिमनियों , मोटर कार , जलाऊ लकड़ी ,सामान्य तेल शोधक ,कृषि और वानिकी प्रबंधन में रसायन इत्यादि .





वायु प्रदूषण के प्रभाव

- वायु प्रदूषण केवल मनुष्यों को ही नहीं बल्कि वनस्पतियों, जीव-जंतुओं, जलवायु, मौसम, ऐतिहासिक इमारतों और यहाँ तक की ओजोन परत को भी नुकसान पहुँचाता है।
- हर साल 2-4 लाख लोगों की मौत का कारण सीधे सीधे वायु प्रदूषण है ।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया के 20 सबसे प्रदूषित शहरों में 13 भारतीय शहरों को रखा गया है इस सूची में नई दिल्ली को सबसे प्रदूषित बताया गया है ।
- वायु प्रदूषण के कारण मनुष्यों को दमा, गले का दर्द, निमोनिया, सिरदर्द, उल्टी, फेफड़े का कैंसर, हृदय रोग, जुकाम, खांसी व आंखों में जलन आदि जैसी समस्या पैदा हो जाती है।
- अस्थमा (दमा) श्वसन मार्ग का एक आम जीर्ण सूजन वाला रोग है जिसे श्वसन बाधा नाम से पहचाना जाता है।आम लक्षणों में घरघराहट, खांसी, सीने में जकड़न और श्वसन में समस्या शामिल हैं।
- वायु प्रदूषण के कारण सूर्य के प्रकाश की मात्रा में कमी आती है जिससे पौधों की प्रकाश संश्लेषण की क्रिया प्रभावित होती है।
- अचानक तापमान में हुई बढ़ोतरी से डायरिया ,पेट दर्द, उल्टी ,सिर दर्द, बुखार, बदन दर्द और त्वचा सम्बन्धी रोगों की
 शिकायत होने लगती है ।
- ज्यादा गर्मी बढ़ने से त्वचा पर चकते तथा खुजली की शिकायत होने लगती है. इसके अलावा भी कई तरह की एलर्जी भी लोगों को परेशान करती है।

भोपाल गैस त्रासदी

- भारत में भयंकर नागरिक प्रदूषण आपदा 1984 में भोपाल आपदा थी इसे "भोपाल गैस त्रासदी ''के नाम से जाना जाता है।
- भोपाल में "यूनियन कार्बाइड नामक कंपनी" के कारखाने से "मिथाइल आइसोसाइनाइड "नामक जहरीली गैस का रिसाव हुआ जिससे लगभग 15000 से अधिक लोगों की जान गई तथा बहुत से लोगों को शारीरिक अपंगता से लेकर अंधेपन के भी शिकार हुए ।







प्रदूषण एवं उनका मनुष्यों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव

- प्रदूषण से होने वाली बीमारी का सबसे बड़ा कारण कार्बनमोनो ऑक्साइड और नाइट्रोजन जैसी गैस है ।
- साथ ही कारों ,बसों और ट्रकों से निकलने वाले धुएं के महीन कण बीमारियों का एक बड़ा कारण है। ये गैसें और कण आदमी के फेफड़ों के रास्ते रक्त में चले जाते है और स्वास्थ्य के लिए खतरा बनते है। यह मानव शरीर पर बहुत बुरा प्रभाव डालता है।
- 🕨 हवा में मौजूद रासायनिक तत्व सांस के रोग पैदा करते है तथा आँख में जलन आदि रोग पैदा करते है।

कार्बन मोनोऑक्साइड(CO):-

- यह गंधहीन, रंगहीन गैस है।
- जो कि पेट्रोल, डीजल तथा कार्बन युक्त ईंधन के पूरी तरह न जलने से उत्पन्न होती है।
- यह गैस हवा से थोड़ी हलकी होती है। ऊँची सांद्रता में यह मनुष्यों और जानवरों के लिए विषाक्त होती है।

शरीर पर प्रभाव

- मानव के फेफड़ों में खराबी ,हड्डियों की कमजोरी तथा शरीर में ऑक्सीज़न की कमी इत्यादि रोग उत्पन्न करती है।
- अधिक मात्र में यह शरीर के अंदर जाए तो पहले दम घुटता है, बाद में बेहोशी आती है और मृत्यु तक हो सकती है।
- यह हमारे प्रतिक्रिया तंत्र को प्रभावित करती है और हमें नींद में ले जाकर भ्रमित करती है।

क्लोरीन :-

- क्लोरीन एक रासायनिक तत्व है संकेत CI है ।
- यह एक पीले और हरे रंग की हवा से हल्की प्राकृतिक गैस जो एक निश्चित दाब और तापमान पर द्रव में बदल जाती है।
- यह पृथ्वी के साथ ही समुद्र में भी पाई जाती है।
- क्लोरीन पौधों और मनुष्यों के लिए आवश्यक है।
- तरणताल में इसका प्रयोग कीटाणुनाशक की तरह किया जाता है। साधारण धुलाई में इसे ब्लीचिंग एजेंट रूप में प्रयोग करते हैं।
- ब्लीच और कीटाणुनाशक बनाने के कारखाने में काम करने वाले लोगों में इससे प्रभावित होने की आशंका अधिक रहती
 है।

शरीर पर प्रभाव

 यह गैस स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है यदि कोई लंबे समय तक इसके संपर्क में रहता है तो उसके स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है। तेज गंध आंखों, त्वचा और श्वसन तंत्र के लिए हानिकारक होती है। इससे गले में घाव, खांसी और आंखों व त्वचा में जलन हो सकती है, इससे सांस लेने में समस्या होती है।

नाइटोजन ऑक्साइड :

- ईंधन जैसे डीजल या कोयले के दहन से प्रदूषित धुएँ का मुख्य अवयव है। यह नाम NO, NO2 तथा अन्य कई गैसों को सम्मिलित रूप से दिया जाता है।
- यह पेट्रोल, डीजल, कोयले को जलाने से उत्पन्न होती है और बिजली कड़कने से समय आसमान में भी बनती है।

शरीर पर प्रभाव

यह गैस बच्चों को, सर्दियों में साँस की बीमारियों के प्रति संवेदनशील बनाती है।

<u>लैड :</u>

यह पेट्रोल, डीजल, लैड बैटरियां, बाल रंगने के उत्पादों आदि में पाया जाता है और प्रमुख रूप से बच्चों को प्रभावित
 करता है। आज लेड का प्रमुख उपयोग लेड एसिड स्टोरेज बैटरियां बनाने में होता है। वाहनों का विद्युत तंत्र एवं जहाजों
 और वायुयानों का विद्युत तंत्र को चालू करने के लिए लेड का उपयोग करता है।

शरीर पर प्रभाव

- उच्चरक्त चाप की बीमारी होती है
- स्नने की समस्या
- शारीरिक समस्या व मानसिक रूकावट
- कैंसर को जन्म दे सकता है तथा अन्य पाचन सम्बन्धित बीमारियाँ पैदा करता है।

• क्लोरो फ्लोरो कार्बन

- क्लोरो-फ्लोरो कार्बन (CFC) यह वे गैसें हैं जो कि प्रमुखत: फ्रिज तथा एयरकंडीशनिंग यंत्रों से निकलती हैं।
- यह ऊपर वातावरण में पहुँचकर अन्य गैसों के साथ मिल कर 'ओजोन परत' को प्रभावित करती है जो कि सूर्य की हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों को रोकने का कार्य करती हैं।

शरीर पर प्रभाव

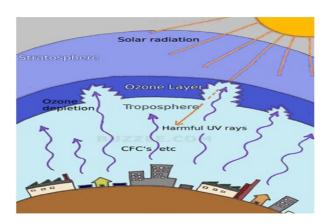
• यह चर्म रोग उत्पन्न करता है।

ओज़ोन:

- एक अकार्बनिक अणु है यह वायुमंडल की ऊपरी सतह पर पायी जाती है जो वायुमण्डल में बहुत कम मात्रा में पाई जाती
 हैं। यह महत्वपूर्ण गैस हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों से पृथ्वी की रक्षा करती हैं। लेकिन पृथ्वी पर यह एक अत्यन्त हानिकारक प्रदूषक है।
- यह एक विशिष्ट तीखी गंध के साथ एक हल्के नीली रंग की गैस है।
- ओजोन की परत लगभग 10 किमी. से 50 किमी. की दूरी तक स्थित है।

शरीर पर प्रभाव

- ओजोन फेफड़ों को नुकसान पहुँचाता है और जलन पैदा करता हैं तथा मौत , अस्थमा , दिल का दौरा , और अन्य हृदय की समस्याओं।
- ओजोन की मात्रा मापने की स्विधाजनक इकाई का नाम डोबसन के सम्मान मे <u>डोबसन</u> इकाई रखा गया है।



सल्फर डाइऑक्साइड :

- यह कोयले के जलने से बनती है। विशेष रूप से तापीय विद्युत उत्पादन तथा अन्य उद्योगों के कारण पैदा होती रहती
 है। इसका रासायनिक सूत्र SO₂ है।
- यह तीव्र गंध युक्त, एक तीक्ष्ण विषेली गैस है, जो कई तरह की औद्योगिक प्रक्रियाओं में तथा ज्वालामुखियों द्वारा छोड़ी जाती है।

शरीर पर प्रभाव

• इससे सांस में रुकावट, जलन, आँख में जलन आदि रोग होते है।

कार्बन डाइआक्साइड

- जो मानव द्वारा कोयला, तेल तथा अन्य प्राकृतिक गैसों के जलाने से उत्पन्न होती है। सामान्य तापमान तथा दबाव
 पर यह गैसीय अवस्था में रहती है।
- वाय्मंडल में यह गैस 0.03% 0.04% तक पाई जाती है ।
- यह एक ग्रीनहाउस गैस है, क्योंकि सूर्य से आने वाली किरणों को तो यह पृथ्वी के धरातल पर पहुँचने देती है परन्तु
 पृथ्वी की गर्मी जब वापस अंतरिक्ष में जाना चाहती है तो यह उसे रोकती है।
- पृथ्वी के सभी सजीव अपनी श्वसन की क्रिया में कार्बन डाइआक्साइड का त्याग करते है। जबिक हरे पेइ-पौधे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया करते समय इस गैस को ग्रहण करके कार्बोहाइड्रेट का निर्माण करते हैं। इस प्रकार कार्बन डाइआक्साइड कार्बन चक्र का प्रमुख अवयव है।

शरीर पर प्रभाव

साँस की बीमारियों के प्रति संवेदनशील बनाती है।

सस्पेन्ड पर्टीकुलेट मैटर (SPM)

• हवा में धुआँ-धूल वाष्प के कण लटके रहते हैं। यही धुँध पैदा करते हैं तथा दूर तक देखने की सीमा को कम कर देते हैं।

शरीर पर प्रभाव

इन्हीं के महीन कण, साँस लेने से अपने फेंफड़ों में चले जाते हैं, जिससे श्वसन क्रिया तंत्र प्रभावित हो जाता है।

मेघमयता, धुंध, कोहरा :

इससे स्वाइन फ्लू ,बुखार ,सर्दी , खांसी आदि रोग होते है । तथा और भी बहुत से प्रदूषक है जो स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालते है ।

वायु प्रदूषण नियंत्रित करने के उपाय

वायु प्रदूषण को रोकने के लिए भारत सरकार ने बकायदा वायु (प्रदूषण निवारण तहत नियंत्रण) अधिनियम 1981 लागू किया है तथा तेजी से वायु प्रदूषण नियंत्रण के उपाय विकसित तकनीक का सहारा लिया जा रहा है ऐसे कार्यों के समन्वित करने के उद्देश से केंद्रिय व राज्यों में पर्यावरण प्रबंधन संगठन की स्थापना की है।

- विश्व स्वास्थ्य संगठन का लक्ष्य लोगों के लिए स्वास्थ्य के उच्चतम संभव स्तर की प्राप्ति में सहायता प्रदान करता है
 तथा स्वास्थ्य मामलो में सक्रिय सहयोग प्रोत्साहित करता है।
- इसके साथ हम आपस में मिलकर भी वायु प्रदूषण को रोकने का उपाय करना चाहिए ।
- वाहनों के धुँआ को नियंत्रित करने के लिए सूक्ष्म नियंत्रण ,स्क्रबर आदि का प्रयोग करना चाहिए ।
- ऐसे ईंधन का उपयोग की सलाह देना चाहिए जिसके उपयोग करने से उसका पूर्ण ऑक्सीकरण हो जाये ।

- इसको पाठ्यक्रम में शामिल कर बच्चों में इसके प्रति चेतना जागृत करनी चाहिए तथा होने वाली बीमारियों एवं हानियों को दूरदर्शन ,रेडियो से प्रकाशित एवं प्रसारित करना चाहिए ।
- कारखानों को शहरी क्षेत्र से दूर स्थापित करना चाहिए ।
- रेल यातायात में कोयले अथवा डीजल के इंजनों के स्थान पर बिजली के इंजनों का उपयोग किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

एक सामान्य स्वस्थ व्यक्ति एक दिन में लगभग 22 हजार बार श्वांस लेता है। लेकिन आज वायुमंडल में वायु प्रदूषण बढ़ता जा रहा है। हवा में कई हानिकारक गैसों की संख्या बढ़ती ही जा रही है ।

- यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले समय में स्थिति भयावह हो जाएगी। इसलिए वायु प्रदूषण के खतरों के बारे में जागरूक करना सेहतमंद रहने के लिए उचित कदम उठाना बेहद आवश्यक है।
- लोगों को अत्यधिक प्रदूषित माहौल में ज्यादा समय नहीं रहना चाहिए, मास्क पहनना चाहिए ।
- ज्यादा थका देने वाली बाहरी गतिविधियों से बचना चाहिए।
- देश में प्रदूषण कम करना हर नागरिक का फर्ज है। 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस मनाया जाता है। इन दिनों में हर जगह पेड़ पौधे और पर्यावरण से संबंधित बहुत से कार्य किये जाने चाहिए।
- अगर आने वाले समय इसका उचित निराकरण नहीं किया गया तो जीव जंतु तथा मानव का श्वसन तंत्र प्रभावित होगा
- यही नहीं मौसम पर भी वायु प्रदूषण का विपरीत प्रभाव पड़ रहा है ,जिसके कारण ही जलवायु प्रभावित हो रही है और बाढ़ और सूखे की स्थिति पैदा हो रही है ।



"व्यायामशाला में आपके द्वारा किये गये अंतिम 3-4 प्रयासों पर ही आपके मासपेशीयो की ताकत निर्भर करती है. उस समय होने वाली तकलीफ ही आपको भविष्य में विजेता बना सकती है. लेकिन बहुत से लोगो को दर्द सहने की आदत नहीं होती और इसी वजह से वे पीछे रह जाते है."

क्या आप जानते हैं ?

- डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि.-।,प्रा.मौ.के,नागप्र

- 1. संसार में सबसे बडा पुस्तक मेला फ्रॅंकफर्ट (जर्मनी) में भरता है ।
- 2. इंटरनेशनल रिन्युएबल एनर्जी एजन्सी का मुख्यालय अबुदाबी में है ।
- 3. पाकिस्तान के सर्वोच्च कोर्ट के पहला हिन्द्स्तानी न्यायाधीश राणा भगवानदास थे।
- 4. घर में सभी संभालकर और सजाकर रखने की जापानी पारंपरिक पध्दित का नाम है कोनभारी इस पध्दिति का अविष्कार मारी कोन्दों ने किया है । यह पध्दिति अब सारी दुनिया में प्रसिध्द है ।
- 5. ताशी मिलक और नुंगशी मिलक दोनों जुडवां बहनों ने संसार के सात उपखंडों में स्थित सर्वोच्च पर्वत शिखरों की सैर की ।
- 6. ''अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा'' को भारत में राष्ट्रपति भवन में गार्ड ऑफ ऑनर देनेवाली पहली भारतीय महिला जवान विंग कमांडर पुजा ठाकुर है ।
- 7. **5 जनवरी 2015** को नीति आयोग का पहले उपाध्यक्ष माननीय पंतप्रधान नरेन्द्र मोदी की नियुक्ति की गई है।
- 8. युरेनियम के सबसे अधिक भंडार कांगो देश में है।
- 9. संसार में सबसे पुराने वृत्तपत्र का अस्तित्व स्वीडन देश में है।
- 10. जग में सबसे कम बेकारी स्वीटजरलैंड देश में है।
- 11. **सी.एन.जी**. पर चलने वाली पहली **रेल हरियाणा** में शुरू हुई ।
- 12. मोनो रेल की पहली महिला चालक जुली भंडारे है ।
- 13. जग में स्त्री भ्रुण हत्या एवं स्त्रीयों की सुरक्षा हेतु युएनओ ने शुरू किया अभियान का नाम है ''For She"
- 14. अंर्तेराष्ट्रीय योगा दिन 21 जून ।
- 15. गोदावरी नदी का दुसरा नाम है ''गौतमी'' I
- 16. अमेरिका का सर्वोच्च नागरी पुरस्कार ''मेडल ऑफ फ्रिडम'' है ।
- 17. संसार में सबसे पहले 'जेल' की स्थापना **इंग्लैंड** में हुई ।
- 18. 'ट्वीटर' का निर्माता **ब्लेन क्क** है ।
- 19. भारतीय सॉफ्टवेयर इंडस्ट्रीज के जनक फकीरचंद कोहली को कहा जाता है।
- 20. राष्ट्रीय उर्जा संवर्धन दिन 14 दिसंबर है।
- 21. 'वाय ग्रोथ मॅटर्स' इस पुस्तक के लेखक जगदीश भगवती है।
- 22. भारतीय मंगल अभियान 2015 को स्पेस पयोनियर एवार्ड मिला है।

- 23. 'श्रीमती शेख हसीना (बांगलादेश) * इनको 'युनाइटेड नेशन्स चॅम्पीयन्स ऑफ द एर्थ पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।
- 24. संसार में सबसे * ऊँची निवासी इमारत टॉर्च टॉवर मुंबई स्थित है।
- 25. 'स्वच्छ भारत अभियान योगदान' के लिए माननीय राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के कर कमलों द्वारा विनोदी कलाकार किपल शर्मा का सत्कार किया गया ।
- 26. 'परिवर्तन माय अनफर्गेटेबल मेमोरिज' यह पुस्तक कोलकता की माननीय मुख्यमंत्री ममता बॅनर्जी ने लिखी है ।
- 27. 28 फरवरी 1987 से प्रत्येक वर्ष विज्ञान दिवस मनाया जाता है । इसी दिन शास्त्रज्ञ सी.वी.रामन ने 'रामन इफेक्ट' यह 'शोध' प्रस्तुत किया ।
- 28. सोलार इंम्पल -।। यह संसार का सोलार-उर्जा पर चलनेवाला पहला विमान है ।
- 29. राष्ट्रपति भवन में स्थित मुगल गार्डन का रचनाकार सर एडविन लुटिन्स है ।
- 30. 'गाय' संवर्धन के लिए स्वतंत्र मंत्रालय की स्थापना सर्वप्रथम राजस्थान में की है।

* * * * * * * *

"जब मै किसी को ये कहते हुए सुनता हु की, 'जीवन बहोत कठिन है', मै हमेशा ये पूछने के उत्सुक रहता हु की, 'जीवन की तुलना किससे की?"

देशवासियों पर हिंदी नहीं अंग्रेजी भाषा थोपी गई है

- शांता उन्नीकृष्णन,वरिष्ठ अन्वादक, प्रा.मौ.के,नागपुर

वास्तव में हम भारतीयों पर यदि सही मायने में देखा जाए तो हिंदी नहीं अंग्रेजी भाषा थोपी गई है, कहने का तात्पर्य यह है कि यदि अंग्रेजी जीविका या नौकरी का माध्यम नहीं होता तो लोग इससे कोसों दूर रहते । देश की कार्यप्रणाली में हिंदी यदि एक महत्वपूर्ण अति आवश्यक भाषा के रूप में निर्धारित किया गया होता तो आज यह जन-जन की प्रिय भाषा के रूप में स्थापित हो गई होती । जब तक देश के प्रति तथा देशीय भाषा के प्रति हमारी मानसिकता नहीं बदलती तब तक हिंदी का सार्थक कार्यान्वयन संभव नहीं है, यह केवल आंकड़ों तक ही सीमित रह जाएगा ।

हिंदी में कामकाज एक राष्ट्रीय भावना है, इसके लिए विशेष अवसर की अवाश्यकता नहीं है । विश्व भर में जनता की पहचान उनकी भाषा से होती है । उदाहरण के लिए अंग्रेजी से अंग्रेजों को जर्मन से जर्मनी, चीनी से चीन, जापानी भाषा से जापानीयों की पहचान होती है ठीक उसी तरह हिन्दुस्तान की भाषा हिन्दी, हिन्दुस्तानियों की पहचान है । ऐसे में भाषा को एक समस्या के रूप में न देखकर पहचान के रूप में देखने में गर्व होना चाहिए ।

स्वतंत्रता के बाद हिंदी भारत की राजभाषा घोषित की गई तथा उसका प्रयोग न्यूनाधिक रूप से कार्यालयों में होने लगा । धीरे-धीरे राजभाषा के रूप में इसका विकास ह्आ ।

भारत के संविधान के अनुछेद तीन सौ इक्यानवे में हिंदी भाषा के विकास के लिए यह निर्देश दिया गया है कि संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें जिससे वह भारत की संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके । इस निर्देश से यह व्यक्त हो जाता है कि हिंदी का विकास 'भारत संघ' को करना है । इसका अर्थ 'भारत संघ' केवल केन्द्रीय सरकार है ऐसा कदापि नहीं है । संघ का अर्थ केन्द्रीय सरकार सहित राज्य सरकारों और अन्य राज्यों के अंत्गत रहने वाले प्रत्येक जन मानस है। भाषा का विकास तभी संभव है, जब जीवन के विविध क्षेत्रों में, उसका प्रयोग होगा । जैसे प्रशासन एवं नित्य कार्य-कलापों में उसका प्रयोग हो, हर स्तर एवं क्षेत्र के लोगों के सहयोग से ही हिंदी भाषा को विकास की दिशा में ले जाना संभव हो सकेगा।

समय परिवर्तन का है, तो हमें भी अपनी सोच में बदलाव लाना होगा । संकल्पों और विकल्पों से नहीं, वरन दृढ़ निश्चय ओर आत्माभिमान ही हिंदी को सही अर्थों में राजभाषा के सिंहासन पर आरूढ़ कर सकता है । निज भाषा में सब काम-काज होगा तो खुद का ही नहीं, देश का भी भला होगा मेरा तो यही मानना है कि 'गुलामी' की झूठी भरपेट शान से बेहतर है कि अपनी आन-बान और शान का बस एक निवाला । तो आइए, बजाएँ पूरी शक्ति से निज भाषा का बिगुल और यदि दृढ़ संकल्प हो, तो, कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती असंभव को संभव में बदल सकते है । "कौन कहता है कि आसमान में छेद नहीं हो सकता, एक पत्थर तो तिबयत से उछालो हवा में यारों " 'केवल पक्का इरादा और इच्छा शक्ति चाहीए, तब हर कार्य संभव हो जाता है ।।

"चला चल मुसाफिर यूँ ही अकेले, चलते-चलते, फिर कारवाँ बन जाता है" ।।

पांचवी अखिल भारतीय विभागीय हिंदी संगोष्ठी

25-26 अप्रैल 2016

'मौसम विभाग के बढ़ते चरण' इस थीम पर आधारित पांचवी अखिल भारतीय विभागीय हिंदी संगोष्ठी का आयोजन दिनांक 25-26 अप्रैल 2016 को मुख्यालय में किया गया। दो दिन चलने वाले इस संगोष्ठी के उद्घाटन कार्यक्रम में मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने संबोधित किया। सवागत भाषण डॉ. देवेन्द्र प्रधान वैज्ञानिक-जी ने प्रस्तुत किया।

प्राकृतिक आपदा प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन, हिंदी और सूचना प्रद्योगिकी, मेक इन इंडिया, वायु प्रदूषण, भूमंडलीय उष्णन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर मौसम वैज्ञानिको एवं अधिकारीयों ने रोचक तथा विज्ञान पर आधारित जानकारी प्रस्तुत करके प्रशंसा के पात्र बने।

विभाग के अन्य मौसम केन्द्रों के साथ इस प्रादेशिक मौसम केंद्र से भी प्रतिभागियों ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। श्री. ए.व्ही. गोड़े स.मौ.वि-। (नागपुर) ने 'मेक इन इंडिया कार्यक्रम में भारत मौसम विज्ञान विभाग की भूमिका', श्री प्रकाश चिंचोले स.मौ.वि-॥ (नागपुर) ने 'चक्रवात का मॉनीटरन एवं पूर्वानुमान, श्री के.के. देवांगन स.मौ.वि-॥(भोपाल) ने 'जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक समस्या और उसके निदान', डॉ. जी.डी. मिश्रा स.मौ.वि-॥(भोपाल) ने 'हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी' तथा श्री. विवेक कुमार पांडेय वैज्ञानिक सहायक (भोपाल) ने 'वायु प्रदूषण' इन विषयों पर पॉवर पॉइंट पर अपने प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में मुख्यालय स्थित हिंदी अनुभाग के अधिकारियों सहित अन्य प्रादेशिक मौसम केंद्रों से पधारें हिंदी अधिकारियों तथा अनुवादकों का विशेष सहभाग लाभान्वित हुआ। इस अवसर पर इस मौसम केंद्र से श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन वरिष्ठ अनुवादक ने उपस्थित रहते हुए अपने सेवाएँ दी है।



दीप प्रज्विति करते हुए (श्री. ए. के. शर्मा वैज्ञानिक-एफ, एम. महापात्र वैज्ञानिक-जी, श्री देवेन्द्र प्रधान वैज्ञानिक-जी, मौसम विज्ञान विभाग के महानिदेशक डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़, श्रीमती अपर्णा खेडकर कनिष्ठ अनुवादक, पुणे, श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन वरिष्ठ अनुवादक, नागपुर)



'चक्रवात का मॉनीटरन एवं पूर्वानुमान', इस विषय पर श्री प्रकाश चिंचोले का प्रस्तुतीकरण



'मेक इन इंडिया कार्यक्रम में भारत मौसम विज्ञान विभाग की भूमिका' इस विषय पर श्री. ए. व्ही. गोड़े का प्रस्तुतीकरण



'वायु प्रदूषण; इस विषय पर श्री. विवेक कुमार पांडेय का प्रस्तुतीकरण



सहभागियों के प्रस्तुतिकरण के उपरांत प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में भाग लेते हुए डॉ. जी. डी. मिश्रा तथा श्री के. के. देवांगन,

कार्यालय की उपलब्धियां









नराकस द्वारा आयोजित आंतरकार्यालयीन प्रतियोगिता में प्राप्त पुरस्कार































हिंदी संगोधनी सोस्सा केंद्रा भोषाल इतिहा





















वंदे मातरम्



अंक : 3 वर्ष : 2016



परिकल्पना एवं मुद्रण,

पादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर - 440005.

ट्रआप: 2283394/2282398 फैक्स:2284266 ई-मेब:hindirmc@gmail.com

वेब. www.imdnagpur.gov.in